

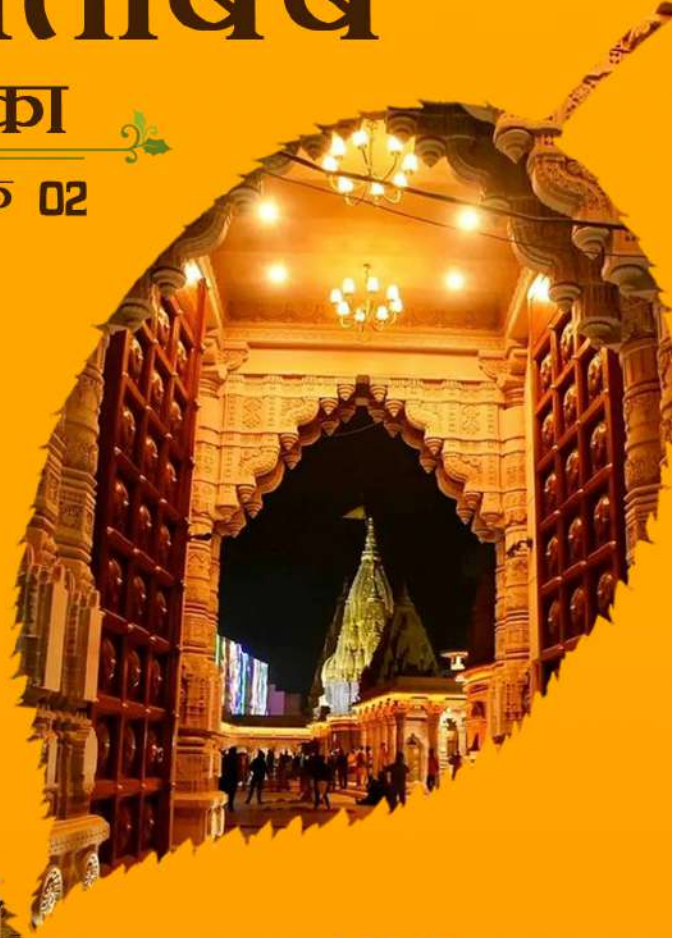


दिसंबर 2023

काशी प्रतिबिंब

ई-पत्रिका

आभासी अंक 02



राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संरक्षक की कलम से

वाराणसी मंडल, पूर्वोत्तर रेलवे के प्रिय सदस्यगण,
आप सभी को काशी प्रतिबिंब 'ई-पत्रिका' के इस अंक के माध्यम से
हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्रिका हमारे संगठन के कार्यक्षेत्र, संगत कार्यशैली, और नवाचारों
का माध्यम है जो आपके लिए उपयोगी है। यह हमारे सभी कर्मचारियों के
लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारियों,
खबरों, और मान्यता प्राप्त कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

हम सभी को गर्व है कि हम एक ऐसे संगठन का हिस्सा हैं जो हिंदी भाषा के
प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करता है। हिंदी भाषा हमारे देश की एक महत्वपूर्ण
भाषा है, और यह भाषा हमारी संस्कृति, इतिहास, और समृद्धि का प्रतीक है। हमारी
रेलवे सेवाएँ देश की आर्थिक वृद्धि और जनसंचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं,
और हम सभी जानते हैं कि विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद हम हमारे यात्रीगण के
लिए सर्वश्रेष्ठ सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

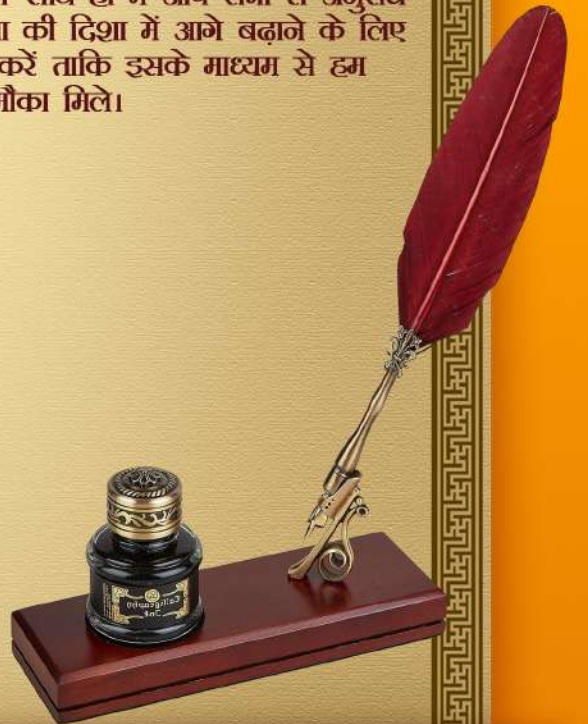
हमारी ई-पत्रिका हमारे कर्मचारियों की मेहनत, उनके योगदान, और उनके परिश्रम
का प्रतिबिम्ब है, हम इसे और भी मजबूत बनाने का प्रयास कर रहे हैं। हम आप
सभी के योगदान के लिए कृतज्ञ हैं, हम आपके सहयोग के लिए आभारी हैं। हम इस
ई-पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख, कविता, कहानी आदि के अतिरिक्त कला,
फोटोग्राफी और बहुत कुछ शामिल करेंगे।

आपसे आग्रह है कि हमारे पाठकों के बीच हिंदी और साहित्यिक विशेषज्ञता के
क्षेत्र में नई खोज और जानकारी को प्राथमिकता दें। साथ ही मैं आप सभी से अनुरोध
करता हूँ कि आप हमारे इस ई-पत्रिका को सफलता की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए
अपने विचार और लेखनीय कौशल के साथ साझा करें ताकि इसके माध्यम से हम
सभी को आपके अद्वितीय दृष्टिकोण से जुड़ने का मौका मिले।

धन्यवाद,



विनीत कुमार श्रीवास्तव
मंडल रेलवे प्रबंधक



अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

मुझे खुशी है कि हम काशी प्रतिबिंब हिंदी ई-पत्रिका के माध्यम से डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहे हैं और इसे बेहतर बनाने के लिए आपके साथ काम कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य है कि हमारी ई-पत्रिका एक महत्वपूर्ण स्रोत बने जो हिंदी भाषा के प्रशंसकों के लिए ज्ञान और मनोरंजन का स्रोत हो सके।



हमें विभिन्न क्षेत्रों के तकनीकी लेखों को शामिल करना होगा जिससे रेल परिवार के लोगों को अपने विचारों को साझा करने का सुअवसर मिले। आपके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाले विचारों, लेखन कौशल, और संपादन के माध्यम से हमारी पत्रिका की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

30 नवंबर 2023 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी का निरीक्षण किया गया। हमें हर्ष है कि मंडल रेल प्रबंधक महोदय के कुशल नेतृत्व में निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। हमने सितंबर महीने में हिंदी दिवस को सफलतापूर्वक मनाया। यह एक महत्वपूर्ण और सार्थक अवसर था हमारे राजभाषा के महत्व को मनाने का। हमने विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियों का आयोजन किया, जिनमें हिंदी के प्रति हमारी गहरी स्नेहभावना और समर्पण भाव प्रकट हुआ। हिंदी दिवस को सफलतापूर्वक मनाने एवं आयोजन करने के लिए मंडल रेल प्रबंधक महोदय के कुशल नेतृत्व में राजभाषा विभाग का सफल और प्रशंसनीय योगदान रहा।

मैं आग्रह करता हूँ कि आप हिंदी के महत्व को समझे, और इस ई-पत्रिका के माध्यम से अपने लेख व विचार प्रस्तुत कर इसके प्रचार और संरक्षण के लिए कार्य करें। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए आप विभिन्न कला, साहित्य, तकनीकी आदि के क्षेत्रों में विशेष रूप से जागरूकता फैला सकते हैं।

धन्यवाद,

रेशन लाल यादव
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) सह
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी



राजभाषा अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियों,

नमस्कार।

काशी प्रतिबिंब (ई पत्रिका) का प्रकाशन करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारा उद्देश्य है हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना, भारत सरकार द्वारा निर्धारित सभी नियमों एवं अधिनियमों का अनुपालन करना और राजभाषा के प्रति हमारे पाठकों की जागरूकता बढ़ाना।

हम चाहते हैं कि हमारे पाठक हिंदी को उनके दिनचर्या में और अधिक सक्रिय रूप से शामिल करें और इसे अपनी अधिकारिक और व्यक्तिगत योग्यता में भी उपयोग करें।

हम आपके साथ मिलकर हिंदी को एक महत्वपूर्ण भाषा और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में बढ़ावा देने के लिए काम करने के लिए उत्सुक हैं। हिंदी ई पत्रिकाएँ एक महत्वपूर्ण साधना हैं जो हिंदी को प्रसारित करने और बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं। यहाँ तक कि हमारी हिंदी ई पत्रिकाएँ हमारे भाषा और साहित्य के प्रति लोगों के जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देने में भी मदद कर सकती हैं।

आपकी मदद और मार्गदर्शन इस कार्य में हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ मिलकर इस कार्य को और भी सफल बनाने में हमारी मदद करें और हमें इस कार्य में सलाह या मार्गदर्शन भी प्रदान करें।

धन्यवाद,

नवनीत कुमार वर्मा
वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक
सह राजभाषा अधिकारी





काशी प्रतिबिंब ई-पत्रिका

दिसंबर
2023

इस अंक में

संरक्षक

विनीत कुमार श्रीवास्तव
मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

रेशन लाल यादव
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
सह अपर मंडल रेल
प्रबंधक (इंफ्रा)

संपादक

नवनीत कुमार वर्मा
राजभाषा अधिकारी सह
वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक

संपादन सहयोग

पूनम त्रिपाठी
वरिष्ठ अनुवादक

ममता यादव
वरिष्ठ अनुवादक

अजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

अमित कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

दिव्या शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

पत्र व्यवहार

संपादक
काशी प्रतिबिंब
राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी
ईमेल : rba.ner.bsb@gmail.com

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
01	साहित्यकार मन्नू भंडारी	कुमुद गुप्ता	05
02	उपेक्षित "वैज्ञानिक जी"	पूनम कुमारी	10
03	मेरे पापा	अदिति	11
04	हिंदी फिल्मों में गीत लेखन का इतिहास व स्वरूप	अमित कुमार साव	12
05	आशियाना	नीरू अवस्थी	13
06	पापा कब आओगे	संजय कुमार गुप्ता	14
07	राजभाषा अधिनियम 1963	भारतीय संविधान	16
08	राजभाषा नियम 1976	भारतीय संविधान	17
09	राय विचार	सौरभ कुमार शर्मा	18
10	संकल्प	एल. के. राय	18
11	राष्ट्रीयता के प्रतीक : नजीर बनारसी	डा. इरशाद अहमद	19
12	गर्मी की छुटी	पल्लवी	22
13	गजब गुलजार साहब	नीरू अवस्थी	24
14	अनुवादक और दुभाषिया : कैरियर विकल्प के रूप में	अजय कुमार सिंह	27
15	मंडल की विविध गतिविधियां	जुलाई 2023	30
16	मंडल की विविध गतिविधियां	अगस्त 2023	32
17	मंडल की विविध गतिविधियां	सितंबर 2023	36
18	मंडल की विविध गतिविधियां	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी का निरीक्षण	39
19	हिंदी सूक्तियां		40

इस ई-पत्रिका की आवरण की डिजाइन एवं पृष्ठों की साज-सज्जा कनिष्ठ अनुवादक अमित कुमार साव द्वारा की गई है

"लोकप्रियता कभी रचना का मानक नहीं बन सकती, असली मानक होता है रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि।" - "मन्मू भंडारी"

"उम्मीद की डोर से बंधा हुआ आदमी भी बहुत कुछ कर गुजरता है कभी-कभी तथा व्यक्ति में इतनी ताकत हमेशा होनी चाहिए कि अपने दुखों संघर्षों से अकेले जूझ सके"।

स्पष्ट तथा सरल आत्मीयतापूर्ण कहानी के द्वारा जीवन के स्पष्ट क्षणों को अनुभूति पूर्ण आत्मसात कराती हिंदी कथा जगत में एक अतुलनीय स्थान प्राप्त मन्मू भंडारी जी का जन्म 3 अप्रैल सन् 1931 ई० को मध्य प्रदेश के मंदसौर जिला के भानपुर गांव में हुआ। इनका बचपन का नाम 'महेन्द्र कुमारी' रखा गया था। इनके पिताजी सुख संपत राय विचारक, राजनीतिक प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार तथा हिंदी पारिभाषिक कोष के निर्माता भी थे। घर के बैठकों में साहित्यिक, राजनीतिक, समसामयिक घटनाक्रम पर विचार विमर्श, वाद-विवाद आकृष्ट करतीं जिनका असर मन्मू जी के विचारों पर भी पड़ा। उनकी माता जी श्रीमती अनूप कुंवारी जी उदार एवं सहनशील, स्नेहिल, धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। पांच भाई-बहनों प्रसन्न कुमार, बसंत कुमार, स्नेह लता, सुशीला में छोटी मन्मू जी थीं।

लेखन कला में इन्होंने 'मन्मू' नाम अपना रखा क्योंकि इनके पिता जी और परिवार के सदस्य बचपन में इन्हें इसी उपनाम से पुकारते थे। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल कॉलेज की प्रधानाध्यापिका शीला अग्रवाल जी ने साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया, दो साल के अंदर ही शरदचंद्र, प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा आदि साहित्यकारों को पढ़ा, जैनेंद्र जी का उपन्यास 'सुनीता' के छोटे-छोटे एवं सरल-सहज वाक्य वाली शैली ने मन्मू जी का ध्यानाकर्षण किया। 1946-47 में अध्ययन के साथ-साथ स्वतंत्रता आंदोलन में प्रभात फेरी, हड़ताल, भाषणों, जुलूस में सक्रिय रहीं। 'अजमेर कॉलेज' से इंटर तक शिक्षा प्राप्त किया। हिंदी विषय में एम ए परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्होंने कोलकाता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' विद्यालय में 9 साल अध्यापन कार्य किया। 1961 में 'रानी बिरला कालेज' की प्राध्यापिका रहीं।

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ के अध्यक्ष रहीं। दिल्ली के 'मिरांडा हाउस' में अध्यापन कार्य किया। अवकाश प्राप्ति के पश्चात दिल्ली में ही स्वतंत्र लेखन कार्य में लगी रहीं। पति राजेंद्र यादव भी कहानीकार लेखक एवं हंस पत्रिका के संपादक रहे। विवाहोपरान्त मन्मू को एक साहित्यिक वातावरण मिला भी। रakesh, कमलेश्वर, रेणु, अमरकांत, महादेवी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सुमित्रानंदन पंत, शरद देवड़ा, उदयभानु सिंह, निर्मला जैन, जवाहर चौधरी, सई परांजपे, ओम प्रकाश, विष्णु प्रभाकर, नेमिचंद्र जैन, स्नेह, अजित, नामवर, प्रभा दीक्षित, अर्चना वर्मा, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, सुधा अरोड़ा, जितेंद्र भाटिया, बासु दा, बच्चन सिंह, प्रभा खेतान, शिवमंगल सिंह सुमन आदि साहित्यकारों/साहित्य से जुड़ी हस्तियों के व्यक्तित्व के उजले-धुंधले पक्ष मन्मू जी ने दिए हैं। वह बताती हैं कि 'इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे लेखकीय व्यक्तित्व को राजेंद्र ने जरूर प्रेरित किया और प्रोत्साहित किया उनके साथ मिलने वाला साहित्यिक वातावरण होने वाली गोष्ठियां मेरे प्रेरणा स्रोत भी रहे लेकिन निरंतर खंडित होते आत्मविश्वास से लेखन में आए गतिरोध का जो सिलसिला शुरू हुआ अंततः उसके पूर्ण विराम पर ही समाप्त हुआ।

मन्मू भंडारी जी ने आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, नाटक, बाल कथा, संस्मरण, पटकथाओं की रचनाएं की वह निम्नलिखित हैं -
मैं हार गई कहानी संग्रह में 12 कहानी संग्रहित है।

'गीत का चुम्बन'— यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस कहानी में आधुनिक एवं परम्परागत मूल्यों के द्वन्द में फँसी स्त्री के अव्यक्त प्रेम की त्रासदी का सशक्त चित्रण हुआ है।

'अभिनेता' यह स्त्री-पुरुष संबंध पर आधारित कहानी है। इस कहानी में नायक दिलीप और नायिका रंजना है। ये दोनों कलाकार भी हैं। दिलीप विवाहित है, रंजना का असत्य कथन के द्वारा आर्थिक शोषण करता है किंतु रंजना को एक दिन मेज की दराज में एक पत्र मिला, जिससे उसके समस्त असत्य अनावृत हो गये। दिलीप विवाहित है यह ज्ञात होने पर रंजना के ऊपर जैसे वज्रपात होता है।

'श्मशान' — श्मशान कहानी में नर और नारी के मध्य उत्पन्न होने वाले आकर्षण की गहनता का व्यंग्यपूर्ण वर्णन किया गया है।

'दीवार, बच्चे और बरसात' — रहस्यात्मकता के साथ पराये घरों की बातें उछालना, परनिन्दा करना आदि मानस के लिए कोई नई बात नहीं है। एक ऐसी मंडली, उसकी निन्दा करने वाली प्रवृत्ति और समूह की मानसिकता का रोचक वर्णन तथा संस्कारों को तोड़ने हेतु बाध्य नारी का चरित्रांकन दीवार, बच्चे और बरसात कहानी में हुआ है।

'अलगाव' यह कहानी अपने छोटे से कलेवर में ग्रामीण पृष्ठभूमि को लेकर आगे बढ़ती है। महिला चिंतन से दूर इस कहानी में जातिगत भेदभाव, पुलिस का लापरवाही, ग्रामीण समाज का चित्रण, अशिक्षित गाँव वाले और आपसी लड़ाई-झगड़े दृष्टिगोचर होती है।

'सयानी बुआ' में गृहणी की अनुशासन प्रियता और घर में चीजों को व्यवस्थित रूप से रखने तथा उनके सदुपयोग को लेकर लिखी गई है। अनू बीमार है, जिसे ठीक होने के लिए डॉक्टर के परामर्श के अनुसार पहाड़ों पर रहना होगा। वहाँ रहने की सभी निर्देश दी गई, किन्तु एक दिन बुआ के पास पत्र आता है कि तुम्हारे द्वारा दिए गए प्यालों में दो प्याले टूट गए पर अनू अच्छी है। कहानी के अंत तक आते-आते बुआ वस्तुओं से अधिक अब रिश्तों से बंधना चाहती है।

'दो कलाकार' कहानी में मित्रता मानव सेवा महत्वाकांक्षा संवेदनशीलता बदलते मानव मूल्य उच्च वर्ग और निम्न वर्ग का भेद और बदलती सोच को दर्शाया गया है कहानी का सबसे संवेदनशील संवाद— "कागज पर निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार जिंदगी क्यों नहीं बना देती? तेरे पास समर्थ साधन है।"

'मैं हार गयी।' कहानी में निम्न और उच्च वर्ग के मानव मूल्यों के साथ-साथ नवीन और प्राचीन मूल्यों के बीच की टकराहट को भी दृष्टिपात किया गया है। समाज का कोई भी वर्ग बदलाव तो चाहता है पर अपनी आत्मोसर्ग नहीं देना चाहता। राष्ट्र में क्रान्ति ला सके और राजनीति में परिवर्तन ला सके, जनता की समस्या के निराकरण करने का प्रयास करे किंतु नायक अपने ही गृह की व्यवस्था में फंसकर रह जाता है, तो राष्ट्र का क्या निर्माता बनेगा। इसी बात को लेखिका ने उकेरा है और कहती है— 'जानते हो, मैं तुम्हारी स्रष्टा हूँ, तुम्हारी विधाता।' लेकिन नायक पर कोई असर नहीं हुआ। दूसरे पक्ष में लेखिका समृद्ध नायक को खड़ा उसे भी लेखिका कहती है— 'जानते हो, मैं तुम्हारी स्रष्टा हूँ, तुम्हारी विधाता।' किंतु नायक पर कोई असर नहीं पड़ता है। नायक कहता है— 'यह उग्र, दुनिया की रंगीनी और घर की अमीरी! बिना लुत्फ उठाए यों ही क्यों बर्बाद की जाए?'

अंत में लेखिका लिखती है— 'मैं हार गई, बुरी तरह हार गई।' कहानी देश की भ्रष्ट राजनीति, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, स्वास्थ्य आदि सभी प्रकरणों पर एक साथ व्यंग्य करती चलती है।

'तीन निगाहों की तस्वीर' 1959 में प्रकाशित कहानी संग्रह में आठ कहानी हैं। तीन निगाहों की तस्वीर में अभिशप्त नायिका के व्यक्तित्व का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक अंकन है। यह एक ऐसी नारी की कथा है जो दीर्घ अवधि तक रोग ग्रसित पति की सेवा सुश्रुषा करती है।

'अनथाही गहराइयाँ'— यह गरीब ज्ञानपिपासु विद्यार्थी की कहानी है। जिसे मुफ्त में पढ़ाने वाली शिक्षिका से असीम लगाव है। शिक्षिका का मिथ्या भ्रम जिसकी आत्महत्या का कारण बनाता है।

'खोटे सिक्के'— इस कहानी की परिणति की दौरान पूँजीवाद की तुलना करते हुए सामंतवादी व्यवस्था पर लिखा गया है, क्योंकि आज के पूँजीवादी दौर में बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों में मजदूरों का हथ्र विश्वविदित है। उनके अधिकार से लेकर श्रम तक का शोषण अनवरत गतिमान है।

'घुटन'— अलग-अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करने वाली दो स्त्रियों के घुटन का मनोवैज्ञानिक धरातल पर मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है जिसमें प्रतिमा विवाहित है, मोना अपने प्रेमी से विवाह की इच्छुक।

'हार'— राजनीति को लेकर मन्नू की लिखी गई दूसरी कहानी है। इसमें दीपा राजनैतिक माहौल में पली-बढ़ी लड़की है, इसमें उसकी अभिरुचि उसे एक राजनैतिक पार्टी का सक्रिय सदस्य बना देती है। दीपा अपना पूरा जीवन समाज सेवा व राजनीति को समर्पित करने का निश्चय करती है।

1966 में लिखा गया 'बिना दीवारों का घर' दांपत्य जीवन में असफल हुए दो वैवाहिक जोड़ों की कहानी है। उनका कहना था "मरे आदमी और सोए आदमी अंतर ही कितना होता है भला! बस एक सांस की डोरी! वह टूटी और आदमी गया!"

'अकेली'— 'सोमा बुआ' नाम के पात्र को केंद्र में रखकर लिखी गई है जो अपने पास-पड़ोस के घुलने के बावजूद अकेले पड़ जाती है क्योंकि वह परित्यक्ता और वह वृद्ध हो चुकी है और पुत्र की असमय मृत्यु के कारण वह पास पड़ोसियों, रिश्तेदारों के साथ मिलकर समय व्यतीत करना चाहती है इसलिए बिन बुलाये ही सबके घर जाकर काम में जुट जाती है। जैसे— "अमरख के बिखरे हुए कल रह-रहकर धूप में चमक जाते हैं ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता है। मन के बहलने प्रसंगों को वह तलाशती रहती है। कहीं थोड़ी देर के लिए दिल बहल जाता है तो कहीं फिर से गहरी चोट मिल जाती है।"

'इनकम टैक्स और नौद'— यह कहानी मध्यवर्गीय समाज की उस संकीर्ण भावना को आधार बनाती है जिसका शिकार आज लगभग पूरा समाज है। कोई भी मध्यवर्गीय व्यक्ति आज के पूँजीवादी दौर में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए अर्थ, संसाधनों व राजनैतिक सामर्थ्य को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है। कभी-कभी यह डींग उसे व्याकुल करती है। 'इनकम टैक्स और नौद'— यह कहानी मध्यवर्गीय समाज की उस संकीर्ण भावना को आधार बनाती है जिसका शिकार आज लगभग पूरा समाज है। कोई भी मध्यवर्गीय व्यक्ति आज के पूँजीवादी दौर में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए अर्थ, संसाधनों व राजनैतिक सामर्थ्य को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है। कभी-कभी यह डींग उसे व्याकुल करती है।

'संख्या के पार' — संख्या के पार एक ऐसी युवती की करुण कथा है, जिसकी विधवा माँ उसे नाना-नानी के पास छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ पलायन कर गई। वर्षों बाद जब प्रमीला के दयनीय दशा व दुख का पता उसकी माँ को चलता है तो वह उससे मिलने के लिए प्रयत्न करती है।

'कमरे, कमरा और कमर' — यह आत्मकथा शैली में लिखी गई है। यह नारी शिक्षा, उसके पारिवारिक जीवन, स्वतंत्र सोच, आगे बढ़ने की सार्थकता आदि कितने ही छोटे बड़े उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ती है। कहानी के केन्द्र में मध्यवर्गीय परिवार की व्यवस्था और उसमें लड़कियों के जीवन शोध और उसकी महत्ता को दिखाती है। कहानी पिता-पुत्री के बीच प्रेम, विश्वास, त्याग, समर्पण और सामाजिक सरोकार को उजागर करती दिखाई देती है।

'शायद' — पूँजीवादी अर्थतंत्र में परम्परागत पेशे की अप्रासंगिकता के कारण व्यक्ति घर परिवार की उपभोक्तावादी अनिवार्यता की पूर्ति हेतु शहर की तरफ भागता है परन्तु पूँजीवादी संस्कृति व साहचर्यता के अभाव में खूनी रिश्ते किस तरह भाव-शून्य होते जाते हैं यह कहानी पूँजीवादी परिवेश (नाकारात्मक पक्ष) में मनुष्यता से मशीनीकरण के बदलाव को रेखांकित करती है।

'आते-जाते यायावर' — आधुनिकता का आवरण ओढ़े रूढ़िवादियों की कथा है।

'त्रिशंकु' — कहानी अपने व्यापक आकार में संबंधों की दुनिया को दिखाती है। स्त्री विमर्श अथवा स्त्री के कई रूपों का लेखिका ने वर्णन किया है— माँ, बेटी, पत्नी, गृहणी, प्रेमिका, आदर्श पड़ोसी आदि का।

'मजबूरी' कहानी अपने छोटे से कलेवर में पलायनवाद को दिखाती है, कैसे आजीविका हेतु ग्रामीण शहरों की ओर जा रहे हैं। इससे गाँव तो खाली हो ही रहे हैं, तथा शहरों पर भी अत्याधिक मानव बोझ बढ़ रहा है। दूसरा इससे गाँव में अकेले रह रहे बूजुर्गों (वृद्धों) को समस्या आती है। कहानी में माता-पुत्र स्नेह का चित्रण है।

'नई नौकरी' — आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने पर स्त्रियों को घर की चारदीवारी में कैद करने की परिवेश और संदर्भ में मन्नू भंडारी ने आधुनिक सुशिक्षित स्त्री के अर्न्तद्वंद्व को व्यक्त किया है।

'आकाश के आइने में' (एखाने आकाश नाई) — एक उल्लेखनीय कहानी है जिसमें संयुक्त परिवार की बदलती हुई संरचना का यथार्थबोध स्तर विद्वमान है। इस कहानी की एक पात्र 'चाची' के माध्यम से संयुक्त परिवार की वेदना को स्पष्ट किया गया है। "जब अपना आदमी ही नहीं पूछे, तो दूसरों को क्या दोष दूँ। तुम्हारी तरह पढ़ी-लिखी होती तो मैं कमाकर खा लेती। तुम्हें तो याद होगा, तुम शादी होकर आई थी तब कैसी दिखती थी गौरा — अब देख लो कैसी हो गई हो"। इस रचना में ग्रामीण और शहरी परिवेश में असंतोष है। 'एखाने आकाश नाई' पर भी बॉलीवुड में सिनेमा बन चुकी है। मन्नू भंडारी की इस कहानी पर साल 1979 में बासु चटर्जी के निर्देशन में फिल्म 'जीना यहाँ' बनाई गई थी। इस फिल्म में शबाना आज़मी, शेखर कपूर, दीना पाठक, सुंदर, अरविंद देशपांडे जैसे कलाकार नजर आए थे। इस फिल्म को भी फिल्मफेयर क्रिटिक्स पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए पुरस्कृत किया गया।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी मध्य प्रदेश दूरदर्शन पर टेलीफिल्म के रूप में प्रसारित किया गया।

कहानी संग्रह 'तीन निगाहों की तस्वीर (1959)' में शायद, असामयिक मृत्यु, तीसरा हिस्सा, नमक, कील और कसक, एक कमजोर लड़की की कहानी, जीती बाजी की हार, चश्मा, मजबूरी, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ, क्षय, तीसरा आदमी, नकली हीरे, नशा, नई नौकरी, बंद दरवाजा के साथ, एक प्लेट सैलाब (1968), छत बनाने वाले, एक बार और, रेत की दीवार, आकाश के आइने में, अलगाव, ईसा के घर का इंसान, तीसरा हिस्सा, बाहों का घेरा, स्त्री सुबोधनी, मुक्ति, मेरी प्रिय कहानियाँ, पंडित गजाधर शास्त्री, नायक, खलनायक विदूषक, संपूर्ण तीसरा आदमी, बन्द दरवाजों का साथ, ऊँचाई सम्मिलित हैं।

10 प्रतिनिधि कहानी जिसे सन 2001 में स्वयं मन्नू भंडारी जी द्वारा प्रकाशित की गयी। 'सजा' कहानी का नायक एक ऐसी विचित्र स्थिति में रहता है जहाँ वह बिना निर्णय हुए ही सजा की यातना से ग्रस्त है। यातना के समय को वह मन की चारदीवारी के पीछे घुटकर व्यतीत करता है।

संक्रांति कालीन मूल्य के मध्य व्यक्ति का व्यक्तित्व किस भाँति खंडित हो जाता है यह 'बंद दरवाजों' के साथ पढ़ने पर अनुभूति होती है।

'एक इंच मुस्कान' (1962) राजेंद्र यादव के साथ मिलकर लिखा गया उपन्यास एक दुःखान्त प्रेम कथा है। यह 1 जनवरी 1961 को ज्ञानोदय में धारावाहिक प्रकाशित हुआ।

धर्मयुग में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित (1971) उपन्यास 'आपका बंटी' का पात्र बालक की कलांत होती संवेदनों से दृष्टिगोचर परिवार का यह जगत एक भयावह दुरूस्वप्न बन जाता है, वह नितांत निर्दोष निरीह और असुरक्षित है जो पति—पत्नी के द्वंद में पिसता है। नई स्त्री के बढ़ती महत्वाकांक्षा आत्मनिर्भरता धनलिप्सा, प्रेम—विवाह, विवाह—विच्छेद एवं वैवाहिक संबंध के विखंडन इन सभी का मर्मस्पर्शी एवं विचारोत्तेजक कहानी है। वह अपने ऊपर बीत रही त्रासदी से बड़ी पीड़ा बच्चों के मन में पैदा हुई घुटन को मानती हैं और बताती हैं कि टूटे परिवारों के बीच बच्चे किस यातना को भोगते हैं। सन् 1970 में लिखा यह उपन्यास बिताते समय के साथ अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है। यह मील के पत्थर की भांति है, इस पर 'समय की धारा' नामक सिनेमा बनी है। इस किताब का अनुवाद बांग्ला, अंग्रेजी फ्रांसीसी भाषाओं में हुआ है।

'महाभोज' उपन्यास तथा नाटक (1979) दोनों विधाओं में प्रकाशित होनेवाली हिंदी साहित्य में प्रथम ऐसी कृति है। इस उपन्यास में दलितों का संघर्ष, राजनीतिक महत्वाकांक्षा पुलिस एवं न्यायिक प्रणाली, भ्रष्टाचार, पदलोलुपता, बदलते राजनीतिक मुद्दों का ऐसा ताना—बाना है कि जिसमें "लोगों के घर, जमीन और गाय—बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं, उनकी आवाज और जबान तक बंधक रखी हुई है"। कहानी में एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हो जाती है, यह एक प्रकारांतर रूप से लोकतंत्र प्रणाली की हत्या थी जिसमें शिक्षा एवं समानता जैसे अधिकारों को सम्मिलित करने के आदर्शपूर्ण बातों की जाती है, क्योंकि राष्ट्र निर्माण एवं विकास में इन्हीं सब का समावेश होना आवश्यक है। अपने उपन्यास के माध्यम से इन्होंने पत्रकारिता के दो चेहरों को उजागर भी करने का प्रयास किया है, कहानी का एक पात्र नरोत्तम जो सही सत्य पत्रकारिता करने की चेष्टा करता है वहीं दूसरी तरफ भवानी है जो पत्रों के बिक्री कैसे अधिक हो, धन लाभ कैसे हो, ऐसी पत्रकारिता करता है। महाभोज नाटक का अंतिम दृश्य अपने आप में नाम के सार्थकता को प्रदान करता है महाभोज अर्थात् बड़ा भोज जो कि व्यक्ति वर्ग की अस्मिता से जुड़ा है स्वार्थ सिद्धि हेतु नैतिकता के पतन को चित्रित करता है। मत्स्य न्याय की राजनीतिक कोलाहल में धरातली सत्य को समझने की जब भी चेष्टा होती है, महाभोज प्रतिरोधी स्वर के प्रलेख के रूप में स्मृत किया जाता है। 'महाभोज' उपन्यास को सन 1976 से लेकर 1980 के बीच प्रकाशित हिंदी भाषा की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति के लिए रामकुमार भुवाल का 1100 रुपये का नकद पुरस्कार मिला।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा महाभोज उपन्यास को 6000 रुपये का पुरस्कार दिया गया (वर्ष 1980—81)

शरदचंद्र की कहानी 'स्वामी' को 1982 में मन्मू जी ने उपन्यास का स्वरूप प्रदान किया जिसमें उन्होंने युवती के सहज मानवीय अंतर्द्वंद्व का रूप को चित्रित किया जो उलझन में उलझ कर उस बिंदु पर जा पहुंचती है जहां उसे नया ऐसा मार्ग प्रशस्त होता है जो अनास्था से आस्था, अविश्वास से विश्वास और नास्तिकता से आस्तिकता के ओर अग्रसर करता है। 'बिना दीवारों का घर' (1966) नाटक लिखा।

ग्रौढ़ शिक्षा हेतु प्रेमचंद की लिखी कहानी 'सवा सेर गेहूँ' का 1993 में नाट्य रूपांतर किया।

'मैं हार गई' गहरी मनोवैज्ञानिक पकड़ मध्यम वर्गीय अन्तर्विरोधी विश्लेषण, नैतिकता की जड़ता के प्रति मोह इत्यादि का विवरण है। अपनी आत्मकथा में लिखती हैं, "पिताजी कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे, वह एक ओर विशिष्ट बने और बनाने के प्रबल लालसा रखते थे तो दूसरी तरफ और अपनी सामाजिक छवि के प्रति उतने ही सजग थे, पर क्या यह संभव है! क्या पिताजी को इस बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं था कि इन दोनों का रास्ता ही एक टकराव का है।"

आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' (2007) में वह एक रूपक ले आती हैं वह रूपक है टूट में बची हुई जीवनी शक्ति को खोजने की।

'कितने कमलेश्वर' संस्मरण के रूप में अद्भुत रचना है।

इन्होंने दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक 'रजनी' की पटकथा लिखी। 'रजनी' शिक्षा का व्यवसायीकरण, टूशन रैकेट, अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का शोषण समान्य जन को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने हेतु प्रेरित करने वाली है।

सिनेमा जगत के लिए पटकथाएं भी लिखीं यथा—

'यही सच है' कहानी संग्रह (1966) पर आधारित 'रजनीगंधा' सिनेमा बनी जिसने 1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार प्राप्त किया।

कथा—पटकथा

'निर्मला' प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास का स्क्रीन प्ले मन्मू जी द्वारा लिखा गया।

'आंखों देखा झूठ' इस संग्रह में आठ कहानियाँ संग्रहित हैं जो निम्न है —

'आंखों देखा झूठ', 'दुर्भाग्य की हार', 'संकट की सूझ', 'आवाजें', 'वशीकरण', 'बढ़ता हुआ यश', 'नहले पे दहला', 'हिम्मती सुमेरा'। कहानियों में बच्चों को नैतिकता, साहस, आदर्श आदि की सुशिक्षा प्रदान की गई है।

मन्नू भंडारी जी को अनेकानेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए — शिमला के आलइंडिया आर्टिस्ट एसोसिएशन द्वारा अखिल भारतीय बलराज साहनी स्मृति साहित्य प्रतियोगिता में 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' तथा 'पीपल्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया (1982-83), हिंदी अकादमी दिल्ली का शिखर सम्मान, 'बिहार राज्य भाषा परिषद' (1991), 'भारतीय भाषा परिषद कोलकाता', 'राजस्थान संगीत नाटक अकादमी' (2001-07) व्यास सम्मान, 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान' द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुए। 'कलाकुंज सम्मान' नई दिल्ली, 'भारतीय संस्कृत संसद कथा समारोह' कोलकाता (1983), 'महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी' (2004), मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन 'भवभूति अलंकरण' (2006-07), केके बिड़ला फाउंडेशन ने उन्हें अपने काम के लिए अद्भुत 'व्यास सम्मान' के साथ प्रस्तुत किया। अपनी रचनाओं में मानवीय प्रश्न एवं असंख्य अनुत्तरित प्रश्न जो की राजनीति से संबंधित थे उन्हें अपने लेखनी के द्वारा पाठकों के समक्ष उद्घाटित किया। इनका कथन है कि "अपने सुख और उल्लास के क्षणों में हम अपने से बाहर होते हैं औरों के साथ होते हैं यातना के चरणों में हम अपने भीतर जीते हैं और वे हमारे अपने होते हैं तथा यही सृजनधर्मा हैं।"

साहित्य और जीवन दोनों को उन्होंने अद्भुत आस्था के साथ लिया। मन्नू भंडारी जी आम जीवन में जितनी सरल और सहज दिखती थी उनका लेखन इसके उल्टा ही तलख है उन्होंने मध्यम वर्ग के जीवन को बेहद समीप से अनुभूति किया और उसे अपने रचना संसार में सदैव शामिल किया। महानगरीय जीवन के स्त्रियों की दशा पर भी अपनी लेखनी के माध्यम से कई चित्र खींचे। वस्तुनिष्ठ और नाटकीयता का दृढ़ निश्चय ही इनकी प्रमुख शैली रही। उनकी रचनाओं में तत्सम-तत्भव, मुहावरों लोकोक्तियों, प्रचलित उर्दू, अंग्रेजी, देशज शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है इन्होंने हास्य-व्यंग, भावनात्मक, वर्णनात्मक शैली के अतिरिक्त समास और संवाद शैली का भी प्रयोग किया। उनके संवाद छोटे-छोटे किंतु सटीक और प्रासंगिक है वाक्य विन्यास व्याकरण सम्मत हैं। कहीं-कहीं काव्यात्मक कथन भी दिखाते हैं—

उदाहरणार्थ — "नानी नानी कहो कहानी

कैसा राजा, कैसी रानी? मायरा-माही सुनो कहानी

नहीं, सुनो नहीं, अब पढ़ो कहानी।

और राजा-रानी की नहीं, नानी की कहानी।"

"बेटू को खिलावे जो एक घड़ी, उसे पिन्हाऊँ मैं सोने की घड़ी।

बेटू को खिलावे जो एक पहर, उसे दिलाऊँ मैं सोने की मोहर।"

इनके लेखन को बड़े सिनेमा तथा नाट्यमंच के लिए अनुकूलित किया गया है, जिसमें दूरदर्शन, बीबीसी और भारत में राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय की प्रस्तुतियाँ हैं।

मन्नू भंडारी जी एक ऐसी रचनाकार हैं जिन्होंने नई कहानी आंदोलन में अपना विशेष योगदान दिया अपनी रचनाओं में यथार्थ जीवन, पारिवारिक जीवन एवं विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियों को विशेष आत्मीय अभिव्यक्ति प्रदान की जो सभी पाठकों एवं कथा प्रेमियों के लिए वरदान स्वरूप है।

15 नवंबर 2021 को गुरुग्राम में मन्नू भंडारी जी का निधन हो गया। मन्नू जी के निधन ने एक निर्वात सा उत्पन्न कर दिया, उनका होना एक वटवृक्ष के समान था, जिसकी छाया से हिंदी कथा जगत आच्छादित था। हिंदी कहानी का एक महत्वपूर्ण स्त्री स्वर शांत अवश्य हो गया परन्तु मन्नू जी जैसी लेखिका कालजर्ई होती हैं।



- कुमुद गुप्ता (पत्नी)
अनिल कुमार गुप्ता
आरक्षण पर्यवेक्षक
औड़िहार जंवलशन
पूर्वोत्तर रेलवे

मन्नू भंडारी

3 अप्रैल 1931 - 15 नवंबर 2021

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की "एक्जामिनी इज बेटर दैन एग्जामिनर" वाली कहानी तो आपने बखूबी सुना होगा लेकिन क्या आप यह जानते हैं कि दशकों बाद इस कहानी को दोहराने वाला एक किंवदंती पुरुष भी था। हम बात कर रहे हैं, बिहार की भूमि के विभूति, युवावस्था में ही "वैज्ञानिक जी" के नाम से मशहूर महान गणितज्ञ श्री वशिष्ठ नारायण सिंह की।

इनका जन्म 2 अप्रैल, 1942 को बिहार के भोजपुर जिले के बसंतपुर गाँव में हुआ था। विलक्षण प्रतिभा के धनी वशिष्ठ जी की स्कूली शिक्षा नेतरहाट रेसीडेंसियल स्कूल में हुई। उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की और उस समय के संयुक्त बिहार में सर्वाधिक अंक प्राप्त किया। उसके बाद पटना साइंस कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा में भी पूरे बिहार में टॉप किया। अब तक उन्होंने तय कर लिया था कि आगे की पढ़ाई वे गणित में ही करेंगे। जब ये पटना साइंस कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे, तब वे अपने शिक्षकों को गलत पढ़ाने के कारण बीच में ही टोक दिया करते थे। काफी शिकायतें मिलने पर कॉलेज के तत्कालीन प्रिंसिपल ने उन्हें अपने दफ्तर में बुलाया और गणित के कई कठिन सवाल पूछे जिसे वशिष्ठ जी ने कई तरीके से हल किया। गणित के साथ अटखेलियाँ करने वाले इस नौजवान के लिए विश्वविद्यालय के नियमों में बदलाव किया गया और इनकी प्रतिभा को देखते हुए स्नातक प्रथम वर्ष से सीधे गणित ऑनर्स के अंतिम वर्ष की परीक्षा में शामिल होने की अनुमति प्रदान की गई। इस परीक्षा में भी वे यूनिवर्सिटी टॉपर रहे।

पटना साइंस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. नागेन्द्र नाथ के मित्र अमेरिका के प्रख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर जॉन एल. केली थे। उनकी अनुशंसा पर ही प्रोफेसर केली वशिष्ठ जी से मिलने पटना पहुँचे थे। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर प्रोफेसर केली ने कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी, अमेरिका में स्कॉलरशिप की व्यवस्था कराई थी। जहाँ उन्होंने जॉन एल. केली के अधीन चक्रीय वेक्टर (साइकिल वेक्टर स्पेस थ्योरी) के साथ रिप्रोड्यूसिंग कर्नेल और ऑपरेटर्स में पीएचडी प्राप्त की। चक्रीय सदिश समष्टि सिद्धांत पर किये गये उनके शोध कार्य ने उन्हें भारत और विश्व में प्रसिद्ध कर दिया। अपनी पीएचडी प्राप्त करने के उपरान्त, वशिष्ठ जी एक सहायक प्रोफेसर के रूप में वाशिंगटन विश्वविद्यालय में शामिल हुए। उनका वाशिंगटन विश्वविद्यालय से शुरू हुआ सफर नासा तक पहुँच गया।

उस समय नासा में अपोलो 14 और अपोलो 15 पर तेजी से काम हो रहा था। कहते हैं, अपोलो प्रोजेक्ट के समय एक बार नासा के 31 कंप्यूटर एक साथ बंद हो गये तब नारायण जी अपनी मैनुअल गणनाएं करते रहे। कुछ समय बाद जब कंप्यूटर वापस शुरू हुए तब सभी यह देख हतप्रभ थे कि उनके द्वारा की गई गणना और कंप्यूटर द्वारा की गई गणना एक समान ही थी।

गणना में कंप्यूटर को मात देने वाले बिहार के इस सपूत ने "द पीस ऑफ स्पेस थ्योरी" से विश्व के गणितज्ञों को चौंका दिया था। अद्भुत गणना शक्ति के लिए इन्हें बर्कले विश्वविद्यालय में जीनियसों का जीनियस कहा जाता था। उन्होंने आइंस्टाइन के सापेक्षता के सिद्धांत को भी चुनौती दे डाली थी जिस वजह से पूरे विश्व ने उन्हें पहचाना। अमेरिका ने डॉ. सिंह को स्थायी तौर पर रहने का ऑफर दिया। कहा जाता है कि प्रोफेसर केली भी अपनी बेटी की शादी वशिष्ठ नारायण से करना चाहते थे, लेकिन बात नहीं बन सकी। स्वदेश प्रेम डॉ. सिंह को भारत खींच लाई। भारत आने के बाद डॉ. सिंह 5 वर्षों तक कुछ शीर्ष संस्थान जैसे आईआईटी कानपुर, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई से जुड़े रहे।

सन् 1973 में उनकी शादी वंदना रानी से हुई। 1974 में सिलिओफ्रेनिया नामक बीमारी उन पर अपना प्रभाव कायम करने लगी। सर्वविदित है, ऐसे में व्यक्ति में सोचने और समझने की ताकत कम होने लगती है। उनकी ऐसी हालत देखकर उनकी पत्नी उनका साथ नहीं दे पाई और उनसे तलाक ले लिया। इससे उनकी बीमारी और बढ़ गई।

1980 में उन्हें कांके के मानसिक रोगियों के अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। वहाँ 10 वर्षों तक इलाज होने के बाद भी उनमें अपेक्षित सुधार न हो सका। सन् 1989 में पिता के निधन पर उन्हें पैरोल पर अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए अस्पताल से छुट्टी दी गई। वह ट्रेन यात्रा के दौरान लापता हो गए। साल 1989 से 1993 तक वे कहाँ थे, किसी को पता नहीं चला। इसके बाद वे छपरा में भिखारी के पास पाये गये जहाँ उन्हें जूठन चुनते देखा गया। तकरीबन 40 साल तक मानसिक बीमारी सिलिओफ्रेनिया से पीड़ित वशिष्ठ नारायण गुमनामी का जीवन बिताते रहे।

जब सिलिओफ्रेनिया की चर्चा होती है, तो अमेरिका के महान् गणितज्ञ जॉन नाश का ख्याल आता है। जॉन सिलिओफ्रेनिया से उबर गए थे। उन्हें नोबल पुरस्कार मिला और उनकी जिंदगी पर "ए व्यूटीफुल माइंड" नाम की फिल्म भी बनी। मगर वशिष्ठ जी गरीबी और सरकारी उपेक्षाओं के कारण इस बीमारी से उबर नहीं पाए। 14 नवंबर, 2019 को उनका निधन हो गया। वे अपने पीछे गणित में अभूतपूर्व कार्य की विरासत और शिक्षा और सामुदायिक सेवा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता छोड़ गए।

गणित के क्षेत्र में वशिष्ठ नारायण सिंह का योगदान व्यापक और महत्वपूर्ण था। उन्होंने बीजगणितीय ज्यामिति, बीजगणितीय समूह और संख्या सिद्धांत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लैंगलैंड्स कार्यक्रम पर उनका काम विशेष रूप से अभूतपूर्व था। अमेरिका में आज भी इनके शोध किये हुए विषयों को पढ़ाया जाता है।

वशिष्ठ नारायण सिंह को गणित में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिले। वर्ष 1988 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा रामानुजन पदक से सम्मानित किया गया था। वर्ष 1998 में उन्हें भारतीय विज्ञान अकादमी के फेलो के रूप में चुना गया था और 2002 में उन्हें राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के फेलो के रूप में चुना गया। वर्ष 2020 में, मरणोपरांत उन्हें भारत सरकार द्वारा भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया।

गणित के इस जादूगर से मिलने वाले लोग यह भी कहते हैं कि वे पेंसिल या कलम से कुछ लिखते रहते थे। कभी अखबार पर तो कभी दीवार पर। मगर क्या लिखते थे? जिसे लोग पूछ नहीं पाए, जान नहीं पाए। क्या हम सदियों तक वशिष्ठ जी की मिलिकियत को सहेजकर रख पाएंगे?

वशिष्ठ जी ने अपने सूत्रों से विश्व पटल पर भारत की छवि को स्थापित किया है। इन्हें भले ही भारत में ज्यादा पहचान नहीं मिल सकी परन्तु बाहरी देशों में इन्हें बहुत ही सम्मान के साथ देखा जाता है।



वशिष्ठ नारायण सिंह

2 अप्रैल 1942 - 14 नवंबर 2019

- पूनम कुमारी

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी / लेखा

मेरे पापा

मेरे पापा मेरी दुनिया की वो हस्ती हैं,
जिनके अंदर मेरी जान बसती है।

माना ऊपर से वो हमारे लिए थोड़े कठोर हैं,
पर मन से वो उगते सूरज की भोर हैं।

कभी नहीं थकते वो, चलते जाते हमारे लिए,
अपनी आँखों में सजाए मेरे हर सपने के लिए।

कभी डाँट कर, कभी प्यार से, करते आसान हर राह हैं,
मेरे जीवन की कड़ी धूप में, पापा हमारे छाँव हैं।

कभी दोस्त, कभी गुरु बनकर पथप्रदर्शक बन जाते हैं,
सही ज्ञान, सही सीरत देकर जीवन खूबसूरत बनाते हैं।



- अदिति

कक्षा - 5

पुत्री - पूनम कुमारी

व.अ.अधलेखा

भारतीय फिल्मों में पार्श्वगीत का तब से महत्व है, जब से बोलते चलचित्र का दौर आरम्भ हुआ। भारत की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' 1913 में बनाई गई थी। यह एक मूक फिल्म थी। प्रथम बोलती फिल्म 'आलम आरा' 1931 में बनी, जिसमें 7 गाने थे। अब तक की सर्वाधिक गीत वाली फिल्म 'इन्दर सभा' (1932) में 72* गाने थे। उन दिनों फिल्मी पात्र (अभिनेता-अभिनेत्री एवं अन्य कलाकार) सेट पर अपनी आवाज में गाते थे और पीछे से साजिंदे (यंत्र-वादक) धुन बजाते थे, जिनको कैमरा की पहुँच से दूर बैठाया जाता था। यहाँ से फिल्मी गीतकारों-संगीतकारों का सफर आरम्भ हुआ।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में हिंदी सिनेमा और सिनेमा के गीत-संगीत ने एक अहम भूमिका अदा की है। इस दौर में हिन्दी साहित्य में छायावादी कवियों का बोलबाला था, जैसे जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत आदि। और दूसरी ओर, ऊर्दू में गालिब और मीर की विरासत को मोमिन, हफीज, मजाज, फैज आदि आगे बढ़ा रहे थे। महाकवि जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत के गीतों का भी इस्तेमाल फिल्मों में हुआ था और प्रख्यात लेखक अमृतलाल नागर ने भी फिल्मों के लिए गीत लिखे थे। 1941 में बनी 'संगम' फिल्म के लिए प्रख्यात हिंदी लेखक अमृतलाल नागर ने गीत लिखे थे। इस फिल्म में जयशंकर प्रसाद के एक गीत, 'अरे कहीं देखा है तुमने' का इस्तेमाल किया गया था। 1942 में अमृतलाल नागर ने 'कुंवारा बाप' फिल्म के लिए भी गीत लिखे थे। 1944 में बनी दिलीप कुमार की पहली फिल्म 'ज्वार भाटा' के सभी गीत पंडित नरेंद्र शर्मा ने लिखे थे। उदय शंकर की फिल्म 'कल्पना' में सुमित्रानंदन पंत के गीतों का इस्तेमाल हुआ था।

तीस और चालीस के दशक में जिन गीतकारों ने हिंदी फिल्म संगीत को पूरे भारत में लोकप्रिय करवाया, उनमें कवि प्रदीप, केदार शर्मा और डी.एन. मधोक, (जिनको महाकवि मधोक की उपाधि दी गयी) का नाम उल्लेखनीय है।

इनके बाद मजरूह सुल्तानपुरी, कैफ़ी आजमी, जाँ निसार अख्तर, साहिर लुधियानवी, शैलेन्द्र, हसरत जयपुरी, शकील बदायूनी, इन्दीवर, राजा मेंहदी अली ख़ाँ इत्यादि फिल्मी गीतों के स्वर्णिम युग के गीतकार रहे। ऊर्दू, हिन्दी और लोक भाषाएँ जैसे ब्रज, अवधि, भोजपुरी, खड़ी बोली का प्रयोग गानों में अक्सर होने लगा। फिल्मी गाने हर फिल्म का महत्वपूर्ण अंग बन गए और हर जुबाँ पर गाने सजने लगे। रेडियो इनकी लोकप्रियता का एक माध्यम बन गया।

उसके बाद साठ, सत्तर के दशक में आनन्द बक्शी, गुलशन बावरा, अनजान, गुलजार, जावेद अख्तर आदि गीत लेखन में और सरलता लाये जिससे कि बदलते दौर की फिल्में गुजर रही थीं। संगीत की लय तेज हो गयी और पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग बढ़ गया। गीतों की भाषा भी गंभीरता से, आम आदमी की बोली में बदल गयी। नब्बे के दशक में गीतकार समीर अनजान छाये रहे। उनके समकालीन महबूब, देव कोहली, पी के मिश्रा आदि रहें और उनके बाद वर्तमान दौर में इरशाद कामिल, प्रसून जोशी, अमिताभ भट्टाचार्य, कुमार, मनोज मुन्तशिर शुक्ला, वरुण ग्रोवर जैसे गीतकार हैं जो इस विधा को आगे बढ़ा रहे हैं।

गीतकार की कई सीमाएँ होती हैं जिसमें धुन पर लिखना और उसी में शब्द डालना सबसे जटिल है। गाने के भाव फिल्म में दर्शाए जाने वाले सीन और धुन के मीटर में होना जरूरी है। शब्दों में सरलता के साथ गहराई भी अनिवार्य है। तीन या चार मिनट के गाने में ये सब होना जैसे गागर में सागर के बराबर है। फिल्मी गीतकारों ने अपने गीतों में देश प्रेम, साधुवाद, छायावाद, भजन, गजल, कव्वाली, केबरे, लोक गीत, डांस सॉन्ग, होली, दीपावली के गीत, दार्शनिक, चिंतनशील, जीवनशास्त्र का अनूठा मिश्रण किया है। यह गीत समस्त भारत में ही नहीं अथवा पूरे संसार में सुने और सराहे जाते हैं।

प्रदीप, शकील बदायूँ, साहिर लुधियानवी, शैलेन्द्र, मजरूह सुल्तानपुरी, हसरत जयपुरी, कैफ़ी आजमी, गुलजार जैसे गीतकारों को तो आज लगभग हर कोई जानता है लेकिन तीस और चालीस के आरंभिक दशक में कई ऐसे गीतकार थे जो आज भुला दिए गए हैं। कम लोगों को पता होगा कि हिंदी फिल्मों में पार्श्व गायन की शुरुआत 1935 में बनी फिल्म 'धूप छाँव' से हुई थी और इसके गीतकार पंडित सुदर्शन थे। हिंदी फिल्मों के पहले स्वतंत्र गीतकार दीनानाथ मधोक थे। नौजवान (1937) पहली फिल्म थी, जिसमें गाने नहीं थे।

बॉलीवुड गीतों में हिन्दी तथा उर्दू की मिश्रित भाषा 'हिन्दुस्तानी' का प्रयोग होता है, जिससे ये हिन्दी तथा उर्दू, दोनों भाषा बोलने वालों को समान रूप से समझ आ जाते हैं। हाल के समय में इन दोनों के अतिरिक्त अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग का भी चलन देखा गया है। उर्दू शायरी और गजलों का शुरु से ही बॉलीवुड संगीत पर अत्यधिक प्रभाव रहा है।

*विकीपीडिया के अनुसार 72 गीत हैं। कुछ स्रोतों के अनुसार कहीं 69 गीत, 70 तथा कहीं 71 गीत हैं।

भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सिनेमा एक बहुत अच्छा माध्यम है। सिनेमा में हर तरह की हिंदी के लिए जगह है। फिल्म में इस्तेमाल की गई भाषा पात्रों की भूमिका, परिस्थितियों और कहानी की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जिसके कारण प्रारंभिक काल से लेकर आज तक इसका स्वरूप निरंतर बदलता जा रहा है। देखा जाए तो शुरुआती दौर की फिल्मों ज्यादातर देवी-देवताओं, पुराणों और धर्मग्रंथों के पात्रों पर ही बनती थीं। जिनमें से अधिकांश में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया गया था। इसके बाद ऐतिहासिक काल की फिल्मों में मुगल काल की प्रधानता के कारण उर्दू का प्रयोग अधिक होने लगा। ग्रामीण परिवेश की प्रधानता वाली फिल्मों में हिन्दी और प्रांतीय बोलियों का ही अधिक प्रयोग होता था। जिस तरह 'मदर इंडिया' में हिन्दी के साथ-साथ भोजपुरी भाषा का इस्तेमाल किया गया है, उसी तरह खेती छोड़कर गांव से शहर आए किसान की दुर्दशा पर आधारित बिमल राय द्वारा बनाई गई फिल्म 'दो बीघा जमीन' में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया था और गानों में भोजपुरी भाषा के शब्दों की बहुतायत थी।

उदाहरण के तौर पर जहां हिन्दी सिनेमा में खड़ी बोली का प्रयोग किया जाता रहा है, वहीं हिन्दी सिनेमा में पीयूष मिश्रा ने 'आरंभ है प्रचंड, बोले मस्तकों के झुंड, आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो' जैसे हिन्दी गाने लिखे हैं। अब 'जिया हो बिहार के लाला, जिया तू हजार साला' या 'मैं घनी वावली हो गई' जैसी क्षेत्रीय शब्दावली वाले गानों में भी नए प्रयोग किए जा रहे हैं।

फिल्म और साहित्य दोनों ही समाज का दर्पण माने जाते हैं। आईना वही दिखाता है जो सच होता है। ऐसे में आज जब फिल्म निर्माता सैनिक से बागी बने पान सिंह तोमर पर फिल्म बनाते हैं तो वे इस बात का खास ख्याल रखते हैं कि पान सिंह तोमर जिस पृष्ठभूमि से आते हैं, उनकी बोली में भी वैसा ही स्वर आना चाहिए। जी हां, यह सच है कि आज बॉलीवुड में ज्यादातर फिल्मों में स्लैंग भाषा का इस्तेमाल होता है, जिसमें अंग्रेजी और हिंग्लिश भी शामिल है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि फिल्म एक उद्योग है, जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ पैसा कमाना भी है, और गीतों का लिखा जाना और संगीत निर्माण उसी के अनुसार होता है।

- अमित कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

आशियाना

मेरे, स्वप्नों के "आशियाने" की,
तितलियों, के पंखों सी "रंग-बिरंगी" दीवारें हो ,
फर्श हो, "हर-मखमल" के बगीचे सा-
चिड़ियों, के शोर से- "चहचहाता-गुनगुनाता" आंगन हो ,
घर का, द्वार हो "मनुहार-दुलार", करता सा-
हवा, के शोर से "मुस्कराती-खिलखिलाती", खिड़कियाँ हों ,
इमारत हो, प्यार के "उफनते-छलकते", समुन्दर सा-
तारों से, "जगमगाती-चमकती", छत हो,
जिसमें, ओस की बूंदें "बिखरी-छितरी" हो,
हर जगह-

फूलों सा "चमकता-महकता" आवरण हो,
मछलियों सा झिलमिलाता "तन-मन" हो,

.....और
मेरे, इस घर के, छत से-
जाता हो, इक रास्ता-
सीधे, सुदूर चाँद तक,
जहाँ, सँदली-कस्तूरी-गमकती हो-
जिसका स्पर्श पाकर,
तो,
वो शब्द भी-
हो जाये मुखर,
जो,
मौन थे,
इक,
समाधिस्थ दृसाधू-समान,
ना.....जाने कब से.....!!!

- नीरु अवस्थी
कार्याधी
म.रे.प्र.(का.) वाराणसी

रोशनदान पर सिर टिकाए चार आंखें अपने प्यारे पापा के लिए अंतहीन इंतजार कर रही थीं! रुआंसा होकर बिट्टू बोला, "मम्मी! लो आखरी बस भी निकल गई, पापा आज भी नहीं आए!" पर पीहू का मन नहीं मान रहा था, अब भी वह उन सुनी पगडंडियों को निहार रही थी, जो मुख्य सड़क को जोड़ती थी और रोशनदान से सड़क पर गुजरते वाहन दिखते थे! नीरजा आकर पीहू को गोद में उठा लेती है, "अरे! मेरा बच्चा क्यों उदास होती हो, पापा बड़े काम के लिए गए हैं! देश की रक्षा के लिए, दुश्मनों को ढिंशुम्-ढिंशुम् करने! काम खत्म होने पर आ जाएंगे!" अब चलो थोड़ा दूध पी लो, पापा जैसे स्ट्रांग बनना है ना और गुदगुदी कर पीहू को हँसाने का प्रयास करती है!

नीरजा बिस्तरे पर बच्चों को मीठी लोरी गुनगुना कर सुलाने की कोशिश कर रही थी! बच्चे तो सो गए पर उसकी आंखों से नींद गायब थी! बच्चों को झूठी दिलासा देते-देते अब वह थकने लगी थी! उसके भीतर की खामोशी और वेदना को समझने वाला कोई नहीं था! कभी-कभी उसका जी करता की खूब रोए, घोर चीत्कार करे! पर आखिर उसका सुनने वाला भी तो कोई नहीं था! बहुत देर तक तकिए में मुंह छुपाए रही और आंसुओं से भिंगोती रही! फिर अचानक से मानों दुर्गा सी शक्ति उसमें प्रवेश कर गई हो! उसे आत्मज्ञान हुआ और भावी परिस्थितियों से कोशिश करने की प्रेरणा मिली! उसने निर्णय लिया कि, नहीं यूँ अब वह हाथ पर हाथ धरे और नहीं बैठेगी! झट से उसने डायरी और पेन उठाया तथा पत्र लिखने बैठ गई! उसने उन सभी लोगों को संबोधित कर अलग-अलग पत्र लिख डाली, जिन से सहायता की उम्मीद थी और उसके पति नवीन शेखर के विषय में कुछ जानकारी मिल सकती थी! उसका संबोधन केंद्र, राज्य, जिला, मानवाधिकार संगठन, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय आदि के संबंधित पदाधिकारियों को निम्न प्रकार से था,

माननीय,

मैं नीरजा शेखर, उस महान सेनानायक लेफ्टिनेंट नवीन शेखर की अभागी पत्नी हूँ, जो ना तो अपने माथे पर सिंदूर लगा पा रही है और ना ही सिंदूर मिटा पा रही है! ना तो अपने पति को शहीद का दर्जा दिलवा पा रही है और ना जीवित होने का दंभ भर सकती है! दो छोटे, बच्चों के मासूम प्रश्न कि 'पापा कब लौट कर आएंगे?' दिलासा देते-देते मैं स्वयं ही टूटने लगी हूँ, पर मैंने हिम्मत नहीं हारी! क्योंकि मेरे बाद बच्चों को संभालने वाला दूसरा कोई नहीं! मेरे पति लेफ्टिनेंट नवीन शेखर कश्मीर में एक 'सिक्रेट मिशन' के दौरान, आतंकवादियों पर बिजली की तरह टूट पड़े और आंधी की तरह उनके हमलों को नाकाम कर तहस-नहस कर दिया! पर दुर्भाग्यवश मिशन में शामिल 20 सैनिकों में 5 शहीद हुए, 5 घायल हुए तथा शेष 9 लोग सकुशल वापस लौट आए तथा एक लापता हुए जिसका अभी तक कोई सुराग या पता लगाने में सरकार विफल है! मैं आप लोगों तक अपने पत्र के माध्यम से अपनी आवाज पहुंचाना चाहती हूँ कि आप लोग मेरे बिट्टू तथा पीहू को उनके पापा से मिलवाएं या फिर उनके मासूम प्रश्नों का जवाब दें कि 'पापा कब लौट कर आएंगे?'

आपकी अभागी
नीरजा शेखर
पत्नी-लेफ्टिनेंट नवीन शेखर

सुबह जब नीरजा की आंख खुली तो उसमें एक गजब की स्फूर्ति तथा आत्मविश्वास लौट आया था! बच्चों को स्कूल छोड़ने के बाद उसके कदम पोस्ट ऑफिस की ओर बढ़ रहे थे, मानों एक नई उम्मीद लौट आई हो! उसकी आंखों की चमक सब कुछ बयां कर रहे थे! उसने ठान लिया था कि जब तक सच्चाई सामने नहीं आ जाती वह चुप नहीं बैठेगी! कहीं ना कहीं उसके दिल के कोने से आवाज आती रहती, मेरा नवीन एक दिन जरूर लौटेगा! मेरे बच्चों पर से पिता का साया यूँ नहीं उठ सकता! मेरे ठाकुर जी इतने निष्पुरु नहीं हो सकते!

दिन बीते, सप्ताह बीते, माह बीते, पर बच्चों का रोशनदान पर से पापा के लिए इंतजार करना नहीं छुटा! हर एक बस की आहत से दिल धक्क सा करता, पर उनका हौसला कम नहीं हुआ! बिट्टू अपने ड्राइंग बुक में भी पिता की छवि उकेरा करता! पीहू पिछले जन्म दिवस पर पापा की दी हुई खिलौने 'ताली बाजाकर डांस करता जोकर' से खेलती और मम्मी से कहती, "मम्मी! पापा से कहो ना दुश्मनों को जल्दी ढिंशुम्-ढिंशुम् करके घर आ जाएं, मैं उनसे नई गुड़िया लाने की जिद नहीं करूंगी!" उसकी बातों से नीरजा इतनी भावुक हो जाती है कि, उसे झट से कलेजे से लगा कर फफक पड़ती है! बिट्टू ममा की स्थिति देखकर थोड़ा समझदारी से, पीहू को कैरम बोर्ड खेलने को सिखाने के बहाने दूसरे कमरे में ले जाता है फिर दोनों खेल में मशगूल हो सब कुछ भूल जाते हैं!

नीरजा का भावुक पत्र पाकर भारत की सुरक्षा एजेंसियां लेफ्टिनेंट नवीन शेखर की खोज में पुनः जोरदार प्रयास करती हैं! उनके सिक्रेट एजेंट से एक खबर मिलती है कि भारत-पाकिस्तान के बॉर्डर पर सटे गांव में नवीन से मिलता-जुलता एक शख्स दिखाई पड़ा है! एजेंसियां सक्रिय हो जाती हैं तथा उस पर नजर रखने लगती हैं! गांव वालों से जानकारी मिली की वह शख्स अपनी याददाश्त भूल चुका है! पूछने पर कि यह व्यक्ति कब से आया है, तो जानकारी मिली कि एक दिन भयंकर सैलाब में बहता हुआ आया और तेज धारा ने उसे किनारे पर फेंक दिया! उसे गहरी चोट लगी थी, उससे शायद उसकी याददाश्त चली गई हो! पर वह बड़ा ही हंसमुख मिजाज का है!

वह अपनी बहादुरी से भी कई बार गांव वालों की मदद कर चुका है! इसीलिए गांव वालों ने उसे अपना लिया और उसका नाम भी चांद रख दिया! पूरी जानकारी इकट्ठी करने के बाद कि वह शख्स लेफ्टिनेंट नवीन ही है, उसे वापस लाने की कवायद तेज हो गई! भारत सरकार के लिए उसे पाकिस्तानी सीमा से लाना चुनौती भरा काम था, लेकिन एक अच्छी खबर यह थी कि वह पाकिस्तानी सैनिकों के हाथ अब तक नहीं लगा था! कहीं ना कहीं उसकी अच्छाई व मदद की भावना ने गांव वालों को विश्वास में लेकर पाकिस्तानी सैनिकों से बचाए रखा था!

यदि राजनीतिक पहल की जाती तो और भी प्रशासनिक अड़चनें आती! भारतीय सेना अधिकारियों की आपसी सूझ-बूझ व पराक्रमी पहल से एक दिन मध्यरात्रि में किए 'ऑपरेशन अनुसंधान' के तहत नवीन को पाकिस्तानी सीमा से ऐसे निकाल लाया गया जैसे शेर की मांद से उसका कोई शिकार छीन लिया हो! आज देश को उसका लाल जांबाज सिपाही नवीन शेखर वापस मिल गया था!

डॉक्टरों द्वारा परीक्षण के बाद नवीन को पूरी तरह फिट तथा नॉर्मल पाया गया! जांच के दौरान नवीन से कई प्रकार के प्रश्न पूछे गए! जब तुम पूरी तरह नार्मल थे तो तुमने भागने या देश लौटने की कोशिश क्यों नहीं की और जान जोखिम में डालते रहे? नवीन का जवाब सुनकर हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है "मेरे लिए देश हित सर्वोपरि है, जब मेरी आंख खुली और मैंने पाया कि दुश्मन के क्षेत्र में फंस चुका हूं तब मैंने झूठ-मुठ याददाश्त खोने का नाटक किया! जब गांव वालों का विश्वास पूरी तरह जीत लिया और पाकिस्तानी सैनिकों की आंखों में ना आ सका तब मैंने आतंकवादियों के ठिकानों और उनकी गतिविधियों तथा उनके द्वारा चलाए जा रहे अभियानों पर नजर रखनी शुरू कर दी! मैं ईश्वर द्वारा दिए इस मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाह रहा था! मुझे पूरा विश्वास था कि एक न एक दिन मुझे इंडियन आर्मी बचा लेगी! मेरी उपलब्ध जानकारीयों के आधार पर हम आतंकवादियों के ठिकानों को पूरी तरह नेस्तनाबूत कर देंगे!" सेना के अधिकारियों ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा वेल्डन लेफ्टिनेंट जरूर तुम्हारी इंफॉर्मेशन के आधार पर हम ऑपरेशन चलाकर उनका खात्मा करेंगे पर उससे भी जरूरी काम हमें करना है! तुमने अपने देश के लिए जान को जोखिम में डालकर अपना फर्ज निभाया! अब हमें भी अपनी ड्यूटी निभानी है! जल्द से जल्द अपनी पैकिंग करो तुम्हारा भी कोई इंतजार कर रहा है!

हर दिन की तरह आज भी रोशनदान पर चार आंखें टकटकी लगाए पापा का इंतजार कर रही थीं! नीरजा पुस्तक पढ़ने के बहाने नवीन की दी हुई सुहावनी यादों में खोई हुई थी! आज शायद बिट्टू और पीहू की इंतजार की घड़ियां खत्म होने वाली थी! मिलिट्री की गाड़ी मुख्य सड़क से उतर कर सीधे पगडंडियों पर आ चुकी थी! बिट्टू बेतहाशा भागकर नीरजा को सूचना देने पहुंचा, "मम्मी! मम्मी! आर्मी की कोई गाड़ी हमारे घर की तरफ आ रही है!" एकबारगी तो नीरजा का दिल कोई अनजान आशंका से धक्क सा कर गया! भागती हुई दरवाजे की तरफ बढ़ी दरवाजा खोलते ही सामने साक्षात नवीन को खड़ा पाकर सहसा उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था! बार-बार वह अपनी आंखों को मिंचे जा रही थी, तब तक पीहू और बिट्टू को पापा गोद में उठा चुके थे! नवीन के सभी साथी अपने साथ लाए तोहफे को एक-एक कर घर के अंदर लाकर सलीके से रख रहे थे!

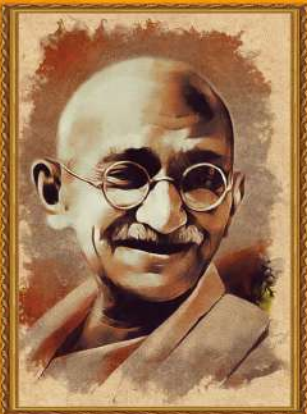
नीरजा को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि नवीन के लिए वह स्वागत कैसे करें मुस्कुराकर या आंसुओं से! उसने अपने अंदर के सैलाब को सेतु बना कर रोक लिया था! वह बस इसी में खुश थी कि उसे अपने बच्चों के कांटो से चूमते प्रश्न कि 'पापा कब आएंगे?' से आज मुक्ति मिल गई थी! बच्चों को पापा की गोद में खिलखिलाते देख उसमें अदभुत आत्मिक सुख का संचार हो रहा था! चाय के बहाने वह पूजा घर में जाकर घुटनों के बल बैठ जाती है और अपने ठाकुर जी को कोटि-कोटि नमस् करती है! मैं जानती थी मेरे ठाकुर जी इतने निष्ठुर नहीं हो सकते!

नवीन के साथी जलपान के बाद विदा लेते हैं! बच्चे रोशनदान से तब तक हाथ हिला कर उन्हें बाय-बाय करते हैं, जब तक की गाड़ी पगडंडियों से मुख्य सड़क पर जाते हुए ओझल नहीं हो जाती! नीरजा सावित्री का रूप घर कठोर तप व प्रयास से सत्यवान रूपी अपने नवीन को यम से छीन कर एक बार फिर वापस ले आई थी!



- संजय कुमार गुप्ता
मुख्य नियंत्रक, वाराणसी कंट्रोल,
वाराणसी मंडल

01. यह अधिनियम वर्ष 1963 में पारित किया गया।
02. इस अधिनियम में वर्ष 1967 में संशोधन किया गया।
03. इस अधिनियम की धारा 3(3) वर्ष 1965 में प्रभावी हुई।
04. इस अधिनियम के अंतर्गत हिंदी से तात्पर्य वह हिंदी है जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
05. इस अधिनियम की धारा 3(3) के तहत निम्नांकित प्रलेख हिंदी तथा अंग्रेजी में होने चाहिए :
(i) संकल्प (ii) सामान्य आदेश (iii) नियम (iv) अधिसूचनाएं
(v) प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (vi) प्रेस विज्ञप्तियां
(vii) संसद के सामने रखी आनेवाली प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट तथा कार्यालयीन कागजात
(viii) संविदाएं (ix) करार (x) अनुज्ञप्तियां (xi) परमिट (xii) सूचनाएं (xiii) टेंडर
06. इस अधिनियम की धारा 3(3) के प्रभावी होने की तिथि से 10 सालों की अवधि बीत जाने के बाद संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया जाना होगा। समिति में 30 सदस्य होंगे जिनमें से 20 लोक सभा से तथा 10 राज्य सभा से। यह समिति हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति के संबंध में अपनी सिफारिशों के साथ एक रिपोर्ट भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत करती है।
07. इस अधिनियम के तहत केन्द्रीय अधिनियमों का प्राधिकृत हिंदी अनुवाद वह होगा जिसे कार्यालयीन राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित किया जाता है।
08. इस अधिनियम के तहत उच्च न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग किया जा सकता है, परंतु प्रलेखों का अंग्रेजी अनुवाद उसके साथ होना चाहिए।
09. इस अधिनियम के अंतर्गत नियम बनाने का अधिकार केन्द्र सरकार को दिया जाता है।
10. इस अधिनियम की धारा 6 और 7 के प्रावधान जम्मू व कश्मीर राज्य पर लागू नहीं है।
11. यह अधिनियम भारत के सभी राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों पर लागू है।

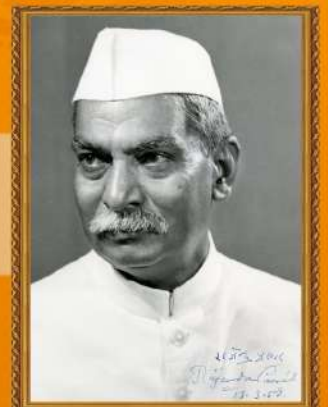


राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

— महात्मा गांधी

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी
होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

— डॉ राजेंद्र प्रसाद



01. राजभाषा नियम वर्ष 1976 में बनाए गए।
02. राजभाषा नियम तमिलनाडु को छोड़कर भारत के सभी राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों पर लागू है।
03. राजभाषा नियम के अंतर्गत देश को 3 क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है अर्थात् क्षेत्र 'क', क्षेत्र 'ख' तथा क्षेत्र 'ग', ताकि राजभाषा के प्रयोग का उचित व व्यवस्थित विस्तार हो।
04. नियम 3 व 4 के अंतर्गत केन्द्र सरकार के क्षेत्र 'क' के राज्य या संघ शासित क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति को संप्रेषण हिंदी में होना चाहिए, क्षेत्र 'ख' में वह हिंदी तथा अंग्रेजी में और क्षेत्र 'ग' में वह अंग्रेजी या हिंदी तथा अंग्रेजी में होना चाहिए।
05. नियम 5 के अंतर्गत हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना चाहिए।
06. नियम 6 के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत रिपोर्ट किए गए सभी प्रलेखों के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
07. नियम 7 के अंतर्गत हिंदी में हस्ताक्षरित पत्र को "हिंदी में प्राप्त पत्र माना जायेगा"।
08. नियम 9 के अंतर्गत यह माना जायेगा कि किसी कर्मचारी को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, यदि उसने मैट्रिकुलेशन, उसके समानांतर या उच्च परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण की हो या डिग्री या उच्चतर परीक्षा में हिंदी को वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो या यदि वह इस बात की घोषणा करें कि उसे प्रवीणता प्राप्त है।
09. नियम 10 के अंतर्गत उस कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त माना जायेगा, यदि वह मैट्रिक्युलेशन, उसके समानांतर या उच्च परीक्षा में हिंदी को एक विषय के रूप में लेकर उत्तीर्ण करें या हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करें या यह घोषणा करें कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।
10. नियम 10(4) के अंतर्गत उस शाखा / कार्यालय का नाम भारत के राजपत्र में अधिसूचित करना होगा जहां पर 80% कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त किया हो।
11. नियम 11 के अंतर्गत सभी मैनुअल, संहिताएं तथा अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य, लेखन सामग्री, आदि हिंदी और अंग्रेजी में होनी चाहिए। सभी फार्म, रजिस्ट्रों के शीर्षक, नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्र शीर्ष तथा लिफाफों एवं अन्य लेखन-सामग्री मदों पर उत्कीर्ण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी में होनी चाहिए।
12. नियम 12 के अंतर्गत राजभाषा नियम के अनुपालन का उत्तरदायित्व शाखा / कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख की होती है।

भाषा संबंधित प्रावधान

संविधान की (8) आठवीं अनुसूची में

22 क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता प्रधान की गई है।

1. असमिया 2. बंगाली 3. बोडो 4. डोगरी
5. गुजराती 6. हिन्दी 7. कन्नड़ 8. कश्मीरी
9. कोंकणी 10. मैथिली 11. मलयालम 12. मणिपुरी
13. मराठी 14. नेपाली
15. उड़िया 16. पंजाबी 17. संस्कृत 18. संथाली
19. सिन्धी 20. तमिल 21. तेलुगु 22. उर्दू

'क' क्षेत्र		
1. हिमाचल प्रदेश	2. हरियाणा	3. राजस्थान
4. उत्तर प्रदेश	5. उत्तराखंड	6. मध्य प्रदेश
7. छत्तीसगढ़	8. बिहार	9. झारखंड
संघ शासित प्रदेश		
1. दिल्ली	2. अंडमान निकोबार द्वीप समूह	

'ख' क्षेत्र		
1. पंजाब	2. गुजरात	3. महाराष्ट्र
संघ शासित प्रदेश		
4. चंडीगढ़	5. दमण और दीव	6. दादरा और नगर हवेली

'ग' क्षेत्र			
1. कश्मीर	2. सिक्किम	3. अरुणाचल प्रदेश	4. असम
5. मेघालय	6. नागालैंड	7. मणिपुर	8. मिज़ोरम
9. त्रिपुरा	10. ओडिशा	11. पश्चिम बंगाल	12. तेलंगाना
13. आंध्र प्रदेश	14. कर्नाटक	15. केरल	16. गोवा
संघ शासित प्रदेश			
1. जम्मू	2. लद्दाख		

मान लिजिये

आप पसीने से तर बतर हैं। बहुत प्यासे हैं, गला सूख रहा है, पर कहीं भी पानी नहीं मिल रहा। ऐसे में आप एक पेड़ की छाया में थकान मिटाने के लिए खड़े होते हैं।

तभी सामने के एक इमारत की पहली मंजिल की खिड़की खुलती है और खिड़की पर खड़े व्यक्ति से आपकी आँखें मिलती है। आपकी स्थिति देखकर व्यक्ति हाथ के इशारे से आपको पानी के लिए पूछता है। आपकी उस व्यक्ति के बारे में कैसी राय होगी? (पहली राय)

आदमी नीचे आने का इशारा करता है और खिड़की बंद कर देता है। नीचे का दरवाजा 15 मिनट बाद भी नहीं खुलता। अब उस व्यक्ति के बारे में आपकी क्या राय है? (दूसरी राय)

16वें मिनट दरवाजा खुलता है और आदमी कहता है - मुझे देरी के लिए खेद है, लेकिन आपकी हालत देखकर मैंने आपको पानी के बजाय नींबू पानी देना अच्छा समझा इसलिए थोड़ा समय लग गया। अब उस व्यक्ति के बारे में आपकी राय बदल गई होगी। (तीसरी राय)

अब जैसे ही आप शर्बत को अपनी जीभ पर लगाते हैं, आपको पता चलता है इसमें चीनी नहीं है। अब उस व्यक्ति के बारे में आपकी क्या राय है? (चौथी राय)

आपके चहरे को देखकर व्यक्ति धीरे से ग्लूकोज का एक पाउच निकालता है और कहता है - आप अपने स्वाद के अनुसार जितना चाहे उतना डाल लें। अब पुनः उस व्यक्ति के बारे में आपकी राय बदल गई (पाँचवी राय)

एक सामान्य स्थिति में भी अगर हमारी राय लगातार बदलती जा रही है तो क्या हम किसी को भी किसी बारे में राय देने के लायक हैं? सच पूछिये तो बस इतना ही समझ आता है अगर कोई व्यक्ति आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करता है तो वह अच्छा है अन्यथा वह बुरा है।

दिलचस्प बिन्दु है स्वयं विचार कीजिये.....



- सौरभ कुमार शर्मा
कौंटावाला, दीदारगंज रोड
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संकल्प

मत घबराओ, मत पछताओ,
कोई राह निकल ही आएगा।
नहीं आज तो कल निश्चय ही,
भाग्य बदल ही जाएगा।
मिट जाएगा, घनघोर अंधेरा,
रौशन जग हो जाएगा।
कठिन तपस्या, त्याग समर्पण,
जीवन को सफल बनाएगा।
मेहनत और संकल्प से कोई
सुंदर पथ बन जाएगा।
मत घबराओ, मत पछताओ,
कोई राह निकल ही आएगा।
नहीं आज तो कल निश्चय ही,
भाग्य बदल ही जाएगा॥



पल भर की कोई आँधी से,
क्यों पर्वत कोई घबराएगा।
अटल सत्य को कोई कैसे,
झूठ प्रपंच जीत पाएगा।
निश्चल और निरूकपट कर्म कर,
लक्ष्य निश्चय ही पाएगा।
नहीं आज तो कल निश्चय ही,
भाग्य बदल ही जाएगा।
मत घबराओ, मत पछताओ,
कोई राह निकल ही आएगा॥

- एल. के. राय
सहायक परिचालन प्रबंधक

जो इक जहान के टूटे हुए दिलों की ढारस है
हमें नाज है कि अपना ही वह बनारस है

गरिमामयी पौराणिक शहरों में बनारस अथवा काशी का स्थान अति महत्वपूर्ण और अति विशिष्ट है। यह आदि काल से ही संतों, सूफियों, धर्म के प्रवर्तकों और साहित्य धर्मियों की पसंदीदा भूमि रही है। जहाँ एक ओर आदि शंकराचार्य से लेकर पंडित तुलसीदास, स्वामी रमानन्द, रैदास, कबीर, और संत जय नारायण दास आदि धर्म के माध्यम से मानवता के लिए अपने संदेशों एवं उपदेशों को पहुंचाये, वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता सेनानियों और साहित्य प्रेमियों ने अपने-अपने ढंग से काशी के लोगों की सेवाएँ की। पंडित रविशंकर प्रसाद, उस्ताद बिस्मिल्ला खां, किशनजी महाराज, गुदई महाराज, पंडित मदन मोहन मालवीय, डा. भगवान दास, शिवकुमार गुप्त, पंडित नारायण त्रिपाठी, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मुंशी प्रेमचन्द, डा. सम्पूर्णानंद, रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि रचनाकारों के योगदान को हम कभी भुला नहीं सकते। उसी प्रकार उर्दू के रचनाकारों में शैख अली हुज्जी, सैयद मजहर हुसैन, पंडित दयाराम आशिक, राजा बलवान सिंह, मीर गुलाम अली खां बहशत, आगा हश्र कश्मीरी, हफीज बनारसी आदि कवियों और लेखकों ने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं अविस्मरणीय कार्य किये। उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए हम नजीर बनारसी को भी याद कर लेते हैं।

नजीर बनारसी का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। वे हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में समान रूप से शायरी करते थे। इस कारण वे दोनों समुदाय में एक समान लोकप्रिय थे। नजीर बनारसी का जन्म 25 नवम्बर 1909 ई. को वाराणसी के मदनपुरा में हुआ था। पिता नूर मोहम्मद पेशा से हाकिम थे। पिताजी की देख-रेख में नजीर बनारसी की शिक्षा-दीक्षा हुई। शिक्षा पूरी करने के बाद पिताजी के कार्यों में हाथ बटाने लगे और धीरे-धीरे इस हकीमी में पारंगत हो गये।

नजीर बनारसी की साहित्यिक यात्रा 1932 ई. शुरू में हुई। उन्होंने गाजीपुर में आयोजित एक राष्ट्रीय मुशायरे में शिरकत की, जिसमें तत्कालीन नामचीन कवि और शायर मौजूद थे। उन्होंने उसमें जो गजल पढ़ी थी उसका पहला शेर यह था -

यह बतलाता है पिछली रात उनका जलवागर होना
सहर के वक्त से पहले भी मुमकिन है सहर होना

यह एक प्रतीकात्मक शेर था। इसमें नजीर बनारसी यह बताना चाहते हैं कि “उसकी सुन्दरता ऐसी है कि वह यदि रात में भी निकल जाए तो भोर हो जाने का आभास होता है”। श्रोताओं ने इस नई सोच, तशबीह और अंदाज को खूब सराहा। इसके बाद नजीर बनारसी मुशायरों और कवि सम्मेलनों के ख्यात शायर बन गए। आकाशवाणी इलाहाबाद से भी उनकी रचनाओं का निरन्तर प्रसारण होता रहा।

हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्के हिमायती, सच्चे देश प्रेमी तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी लेखनी द्वारा भारत के युवाओं में क्रांति एवं देशभक्ति की ज्वाला फूंकने वाले शायर सम्राट नजीर बनारसी ने राष्ट्रभक्त कविता के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। उन्होंने मुंशी बेताब बनारसी की शागिर्दी में शायरी के गुढ़ रहस्यों एवं बारीकियों समझा और सीखा। उन्होंने गजल, कविता, मुक्तक, छंद, मर्सिया, कसीदा, नात और स्तुतिगान सब कुछ लिखा और उच्च स्तरीय लिखा। साथ ही साथ उन्होंने जीवन दर्शन, गुढ़ रहस्यों को समझने और दुनिया के रचयिता ईश्वर या अल्लाह को पहचानने के लिए हर मजहब के व्यक्तियों को आपस में प्रेम, भाईचारा और मित्रता की कड़ी को फौलाद की तरह मजबूत बनाने की आवश्यकता बल दिया।

अगर इंसा को हर इंसा से मुहब्बत हो जाए
यही दुनिया जो जहन्नम है, ये जन्नत हो जाए

नजीर बनारसी ने अपने कविता संग्रह “राष्ट्र की अमानत राष्ट्र के नाम” में अपनी राम कहानी अपनी जबानी नामक एक आलेख लिखा है। उसमें लिखते हैं “मैं जिन्दगी भर शांति, अहिंसा, प्रेम, प्यार, मुहब्बत, आपसी मेल-मिलाप, इन्सान-दोस्ती, आपसी भाईचारा, कौमी एकजुटता और राष्ट्रीय एकता का गुण आज ही नहीं अपितु 1934 ई. से गाता चला आ रहा हूँ। मेरी नज्में हों या गजलें, गीत हो या रुबाईयां, मुक्तक हों या मुखम्मस, बरखा रुत हों या वसंत ऋतु, होली हो या दीवाली, शबे बरात हो या ईद, दशमी हो या मुहर्रम, इन सब में आपको प्रेम, प्यार, मुहब्बत, सेवा भावना, देशभक्ति, कारफरमा मिलेगी”।

हमने तो नमार्जे भी पढ़ी है अक्सर
गंगा तेरे पानी से वजू कर करके
मैं वह काशी का मुसलमाँ हूँ कि जिसको ऐ नजीर
अपने घेरे में लिये रहते हैं बुतखाने कई

नजीर बनारसी ने लम्बी उम्र पाई थी। उन्होंने अपने जीवन को साकार किया। उन्होंने अपनी उम्र की ही तरह कविता भी लम्बी दुनिया बसाई। वे देश-विदेश में सुने और पढ़े जाने वाले तथा पसंद किये जाने वाले लोकप्रिय कवि थे। मुशायरों के अच्छे फनकार थे। श्रोताओं के मुड और मिजाज के अनुसार तरन्नुम और तहत दोनों प्रकार से पढ़ने वाले हर दिल अजीज कवि थे। उन्होंने अपनी कविताओं में अनेक प्रकार के विषयों को समाहित किया। गजल भी प्रचुर मात्रा में लिखी। नात, कसीदा, रुबाई और मुक्तक भी लिखे। उन्होंने भारत के नामीगिरामी व्यक्तियों पर प्रशंसात्मक कविताएँ लिखी हैं। परन्तु हम देखते हैं कि नजर बनारसी की वे कविताएँ जो राष्ट्र को समर्पित हैं वे आकर्षक, अछूती और अद्वितीय हैं। “राष्ट्र की अमानत राष्ट्र के हवाले” उन की राष्ट्रीय कविता और गीतों का अनुपम संग्रह है जिसका प्रकाशन 1992 ई. में हुआ था। इस पुस्तक का सम्पादन श्री बच्चन सिंह ने किया तथा बाबु जगमोहन दास चौरिटेबल ट्रस्ट, सिगरा, वाराणसी ने प्रकाशित किया। इस पुस्तक में “देशराग” के शीर्षक से कुल पचास कविताएँ सम्मिलित हैं। नजीर बनारसी ने राष्ट्रीय गीत एवं कविताओं में साम्प्रदायिकता का विरोध पुरजोर तरीके से किया। उन्होंने शायरी के माध्यम से साम्प्रदायिकता की हानियों पर प्रकाश डाला है। वे कहते हैं –

खून अब किसी इन्सान का पीने नहीं दूंगा
ए फिरका परस्ती तुझे जीन नहीं दूंगा
मिट्टी में मिला देने की अब ठान चुके हैं
हम देश निवासी तुझे पहचान चुके हैं

देश के स्वतंत्रता संग्राम में हजारों व्यक्तियों ने अपने प्राण गवाये हैं तब हमें यह अनमोल आजादी मिली है। अब इसकी सम्प्रभुता एवं स्वाभिमान की रक्षा करना हर देश वासियों का परम दायित्व है। नजीर बनारसी ने इससे सम्बन्धित “देश ही अब धर्म है देश ही इमान है” नामक लम्बी कविता लिखी है और अपने देश वासियों की संदेश दिया है कि चाहे जितनी मुश्किलों का सामना करना पड़े देश के स्वाभिमान पर कोई आँच नहीं आनी चाहिए।

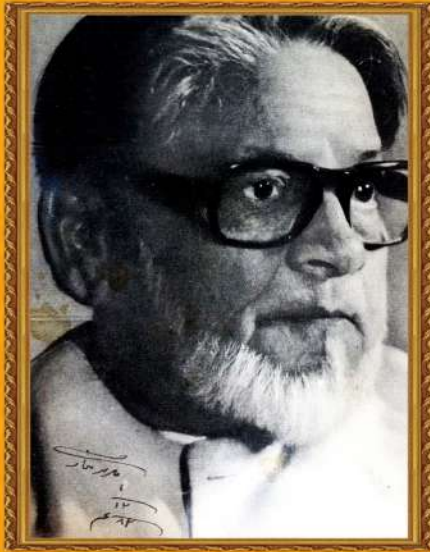
आ गये हैं राहजन छीने आजादियाँ
तुम भी छीनों सैनिकों, चौकियों पर चौकियाँ
मौत भी घबरा उठे इतनी दो कुरबानियाँ
देश के गौरव भी तुम देश के अभिमान भी
देश ही अब धर्म है देश ही ईमान है
आ गया बड़ा समय पड़ गई खतरे में आन
क्यों न ऐसे वक्त में बूढ़े बन जायें जवान
आज से यह सोच लें देश के सारे किसान
जंग का सामान है खेत भी खलियान भी
देश ही अब धर्म है देश ही ईमान है।

यूँ तो हर इन्सान को मरना है परन्तु नजीर बनारसी ने वतन पे मरने वालों का विशेष गुणगान किया है और बताया है कि वतन पे मरने वाले बहुत भाग्यशाली होते हैं। इनके नाम इतिहास के पन्नों में सुनहरे शब्दों में दर्ज हो जाता है। देखें पंक्ति –

इक रोज तो मरना ही होगा फिर क्यों न वतन पर मर जाएँ
इतिहास हमेशा दुहराए इक काम ऐसा कर जाएँ
जिसे जिस तरफ हो जाना वह खुशी के साथ जाए
हो वतन से प्यार जिसको वह हमारे साथ आए
न जनाब शेख का न जनाब बरहमन का
है वतन तो सिर्फ उसका जो वतन के काम आए

नजीर बनारसी की भारत माता से, युवा पीढ़ी का तराना, तवानाई, 26 जनवरी और 15 अगस्त जैसी कविताएँ राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए समर्पित हैं। इनमें भाईचारे का, प्रेम का, त्याग का और बलिदान का संदेश है। वे युवा पीढ़ी से आव्हान करते हैं कि किसी भी कीमत पर देश के स्वाभिमान से समझौता नहीं करना है। नजीर बनारसी की गजलों में भी राष्ट्रीय तत्व प्रचुर मात्रा में देखे जा सकते हैं।

इस प्रकार हम नजीर बनारसी को राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत कवि के श्रेणी में रख सकते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशभक्ति का जो संदेश दिया है वह हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।



- डा. इरशाद अहमद
लो. पा. मेल-डीजल लॉबी
छपरा

नजीर बनारसी

25 नवंबर 1909 - 23 मार्च 1996



हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है,
जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।
- मदन मोहन मालवीय

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती



गर्मी की छुट्टी.... नहीं, लंबी छुट्टी..... और कोरोना का कहर..... जिसने पूरे विश्व को दिन, महीने नहीं, वर्षों घर में बंद कर दिया। इस गर्मी की छुट्टी भी घर पर ही बीतने वाली थी। रोज-रोज मेरे उदास चेहरे को देखकर मम्मी ने एक दिन अचानक कहा, चलो कहीं घूमकर आते हैं। पर, कहाँ..... कोविड की दहशत तो अब भी थी, सो लंबी यात्रा तो कर नहीं सकते.... तो जाएँ कहाँ.....

गोरखपुर?

यह भी कोई घूमने की जगह है। यार, मम्मा..... गोरखनाथ मंदिर? वो तो यहीं विश्वनाथ मंदिर घूम आएँ... यह भी कोई घूमना हुआ....

नहीं, बेटा, सिर्फ गोरखनाथ मंदिर नहीं, गीता प्रेस, रेलवे म्यूजियम, नौका विहार फाउंटेन....

अच्छा, अच्छा.....

पर सिर्फ मम्मी को पता था कितना मजा आने वाला है।

चूँकि काफी समय बाद घूमने जा रहे थे तो थोड़ा उत्साह तो था। सुबह समय से तैयार होकर हमने ट्रेन पकड़ ली और साढ़े ग्यारह बजे थे हम गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर।

बिना समय गंवाये हम चल पड़े गीता प्रेस। मम्मी ने अपने एक सहकर्मी के माध्यम से गीता प्रेस में कार्यरत एक अंकल से संपर्क किया जो गीता प्रेस के दरवाजे पर हमारे स्वागत के लिए खड़े थे। उन्होंने हमें गीता प्रेस के दर्शन कराए। प्रोडक्शन हाउस में मैंने पहली बार इतनी बड़ी-बड़ी प्रीटिंग मशीनें देखीं। विभिन्न रंगों की स्याही के साथ प्रिंट होते देखना सचमुच एक अविस्मरणीय अनुभव था। वहाँ हमने गीता प्रेस की सबसे पहली प्रीटिंग मशीन देखा। सच बताऊँ, मुझे तो वहाँ की नई छपी हुई पुस्तकों की सुगंध ने बड़ा लुभाया। वहाँ के कमरे बहुत बड़े-बड़े थे। मशीनें तो हमसे भी बड़ीं। फिर हम गीता प्रेस के संग्रहालय गये जहाँ हमारी धार्मिक पुस्तकें मेरे कौतूहल का विषय थीं। वहाँ से निकलना असंभव-सा जान पड़ा, पर आगे हम पहुँचे लीला चित्र मंदिर। जहाँ 684 सुंदर चित्रों में भगवान राम और भगवान कृष्ण की लीलाओं को जन्म से अंत तक को व्यवस्थित रूप में दिखाया गया है। श्रीकृष्ण लीला को दर्शाने वाली 92 पुरानी मेवाड़ी शैली की पेंटिंग बहुत-ही अच्छी लगी। संगमरमर के ब्लाकों पर खुदी हुई पूरी "गीता" तथा 700 दोहे और संतों के छंद ने बहुत-ही आनंदित किया। वहाँ से निकलते ही एक मंदिर था राधा-कृष्ण का। हमने वहाँ भी दर्शन किये और दान दिया। वहाँ से निकलकर हम गीता प्रेस की बड़ी दुकान पर गए और गीता के साथ-साथ कुछ अन्य किताबें भी खरीदीं साथ ही इमली कैंडी भी।

फिर हम चल पड़े अपनी यात्रा के दूसरे पड़ाव पर यानी रेलवे म्यूजियम....

मम्मी ने मेरी ओर देखा.... और मेरे मुंह से अनायास निकल गया, मम्मा, वाकई, बहुत मजा आया.... और अब हम थे प्रसिद्ध रेलवे म्यूजियम, गोरखपुर में। सबसे पहले मैंने टॉय ट्रेन की सवारी की। ओओओओ..... बहुत ही आनन्ददायक सवारी। फिर हमने 1874 में लंदन में बने लार्ड लॉरेंस स्टीम इंजन को देखा जो सबके आकर्षण का केंद्र था। साथ ही हमने पुराने अन्य इंजन, विभिन्न श्रेणी के रेलवे कोचों को देखा। वहाँ हमें रेलवे के इतिहास को जानने का मौका मिला। फिर हमने रेलवे कोच रेस्टोरेंट में खाने का आनंद लिया। सचमुच यह एक उत्कृष्ट पिकनिक स्थल है। यहाँ हमने कई सेल्फी भी ली।

दिन ढलान पर था। हम चले गोरखनाथ मंदिर।

बहुत ही शांत और सुरमय। ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं। हमने पूजा-अर्चना की। मंदिर के बड़े परिसर में विचरण किया। संतों की मूर्तियों को नमन किया। परिसर में भक्तों के लिए बने बहुत-सारे कमरों का भी भ्रमण किया जहाँ वैवाहिक कार्यक्रम हो रहे थे। हमने परिसर में बने तालाब पर भी कुछ समय बिताया जहाँ हमारी सारी थकान उतर गई।

अब हम अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव यानि नौकाविहार फाउंटेन चले।

सुहानी शाम, भीड़-भाड़ और शोर-शराबा....

मम्मा ने पूछा, नौका विहार करना है? मेरी नजर सजे-धजे ऊँट पर पड़ी.... नहीं, मम्मा, ऊँट की सवारी करते हैं। अगले मिनट हम ऊँट पर थे। ऊँट ने तो हमें चांद पर पहुँचा दिया। आनंद और रोमांच से भरपूर सवारी....

शाम ढलान पर थी। चूंकि वाराणसी में मैं कई बार नौका विहार कर चुकी थी। सो हमने वहीं घूमकर कुछ चटपटा खाते हुए शाम बिताने का निश्चय किया। चूंकि ट्रेन देर रात थी, सो कोई जल्दी नहीं थी। हमने ढेर सारी सेल्फी ली, तस्वीरें खींची। डिनर किया, फिर चल पड़े वापसी के लिए.....

वाकई बहुत—सी दिलचस्प और यादगार यात्रा थी।

तो आप भी घूम आइए, गोरखपुर.....



- पल्लवी

कक्षा - 11

पुत्री - पूनम कुमारी

व. अ. अ/लेखा



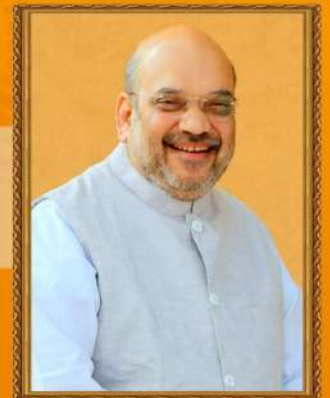
भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को रम्यसूरी से समाहित किया है।

- नरेंद्र मोदी



भारतीय सभ्यता की अविरोध धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

- अमित शाह



गुलजार साहब का नाम “सम्पूर्ण सिंह कालरा” था उनका जन्म 18 अगस्त 1936 में दीना झेलम जिला पंजाब भारत में हुआ था। (जो अब पाकिस्तान में शामिल है) जब देश का विभाजन हुआ, तब उनका परिवार पंजाब के अमृतसर में आ गया। उनका बचपन दिल्ली की गलियों में बीता। वहीं से गुलजार साहब का फिल्मी सफर शुरू हुआ और वे मुम्बई में आ बसे। उस दौरान वे बस शौकिया तौर पर खाली वक्त में कविताये लिखते थे एवं गैराज में मैकेनिक के तौर पर काम करते थे। पेट्रोल की खुशबू में धीरे-धीरे शायरियों को कलमबद्ध करने का दौर शुरू होने लगा। उर्दू, पर्शियन, बंगाली के साथ-साथ हिन्दी भी सीखने लगे उनके लेखन में प्रख्यात लेखक शरतचंद्र एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य का अदभुत प्रभाव था तभी तो उनके संवाद लेखन में फिल्मों में बंगला का असर स्पष्ट दिखाई देता है। गुलजार साहब हिन्दी फिल्म जगत के प्रसिद्ध गीतकार, कवि, संवाद लेखक, निर्देशक तथा जानेमाने शायर के रूप में जाने जाते रहे हैं। इन्हें “स्लमडाग मिलियनेयर” में लिखे गीत “जय हो” के लिए “ऑस्कर पुरस्कार” से पुरस्कृत किया गया है साथ ही “ग्रेमी अवार्ड” से भी सम्मनित किया गया है 2013 में इन्हें “दादा साहेब फाल्के सम्मान” भी प्राप्त हुआ।

कहते हैं कि, मुम्बई माया नगरी है, जो दिल से मुम्बई का हो जाता, वो उसको पनाह जरूर देती है एवं वक्त पलट कर रख देती है। ऐसा ही कुछ हमारे गुलजार साहब के साथ भी होना शुरू हुआ। दिल्ली से मुम्बई आने पर मैकेनिक का काम छोड़ कर उनको शायरों साहित्यकारों का मजमा मिल गया। हिन्दी फिल्म जगत के नामचीन निर्देशक “बिमल राय, ऋषिकेश मुखर्जी एवं हेमंत कुमार” के सहायक के रूप में काम करने का मौका मिला। इसी बीच उन्हें 1963 में निर्देशक बिमल राय की फिल्म बंदिनी के लिए अपना पहला “गीत लिखने” का अवसर प्राप्त हुआ “भोरा गोरा अंग लईले, मोहे श्याम रंग दईदे” जिसके म्यूजिक डायरेक्टर एस.डी.बर्मन जी थे। इसके बाद उन्होंने 1969 में “खामोशी” फिल्म के सुपर हिट गीत “हमने देखी है उन आँखों की महकती खुशबू” लिखा, इसी गीत के बाद से उनको भरपूर सफलता मिलती चली गयी। कामयाबी उनके कदम चूमने लगी एक के बाद एक दिल को छू लेने वाले गीतों का सृजन होना शुरू हो गया, 1971 में फिल्म “गुड्डी” का गीत “हमको मन की शक्ति देना” जो आज भी बहुत से विद्यालयों में सुबह की प्रार्थना सभा में गाय जाता है, काफी प्रसिद्ध हुआ। इसी के साथ गुलजार साहब का कारवा चल निकला एक के बाद एक सुमधुर गीत फिल्म जगत में गूँजने लगे, उनके लिखे गीतों के एक-एक शब्द मायने रखते हैं। उन्होंने कई बेहतरीन फिल्मों के गीतों के बोल लिखे जो आज तक सुप्रसिद्ध हैं जिन्हें बहुत तारीफ मिली एवं चतुर्दिक सराहा गया है, जिन्दगी के बहुरंगी रंग देखना हो तो गुलजार साहब की फिल्में देखें उनके गीत सुनें।

गीत लेखन के साथ-साथ गुलजार साहब ने “संवाद लेखन” का कार्य भी किया, 1968 में “आशीर्वाद” फिल्म काफी प्रसिद्ध हुई जिसमें अशोक कुमार का अभिनय काफी सराहा गया। इसी के साथ-साथ “फिल्म निर्देशन” का कार्य भी बखूबी संभाला, 1971 की “मेरे अपने” इक प्रभावी, पारिवारिक फिल्म जो समाज की विसंगतियों को रेखांकित करती है, जिसमें मीना कुमारी ने अविस्मरणीय अभिनय किया, जिसे कौन भूल सकता है, गुलजार साहब ने इस फिल्म के बाद पीछे मुड़ कर नहीं देखा 1972 में बनी संवेदनशील फिल्म “कोशिश” में संजीव कुमार एवं जया बच्चन ने दिल को छू लेने वाला एक मूक-बधिर जोड़े का बेहतरीन अभिनय किया। जिसका सफल निर्देशन तथा पटकथा लेखन गुलजार साहब ने ही किया था, जिसे उस दौर में “नेशनल अवार्ड” से नवाजा गया था 1975 में कुसुम और डॉ बूढ़ावन के प्यार की कहानी फिल्म “खुशबू” जिसमें हेमा मालिनी एवम जितेन्द्र ने जबर्दस्त अभिनय किया प्यार की मिसाल कायम की जिसका संवाद लेखन एवं निर्देशन स्वयं गुलजार साहब ने किया इन्होंने लीक से हट कर बेहतरीन फिल्मों का निर्माण किया गुलजार साहब की लेखनी में एवं फिल्मों में शरतचंद्र के उपन्यासों से प्रेरित संवेदनशीलता, सहानुभूति, मार्मिकता एवं दयालुता परिलक्षित होती थी, ऐसा लगता है कि साहित्य से उनका प्रगाढ़ रिश्ता हो उन्होंने कई उम्दा फिल्मों का सफल निर्देशन एवं निर्माण किया जिनमें परिचय (1972), आंधी (1975), मौसम (1975), किनारा (1977), मीरा (1979), अंगूर (1982), नमकीन (1982), इजाजत (1987), लिबास (1988), लेकिन (1990), माचिस (1996) जैसी प्रसिद्ध एवम काफी चर्चित फिल्में शामिल हैं। जिनमे सभी अदाकारों ने शानदार अभिनय किया एवं बहुत सी फिल्मों को अवार्ड से नवाजा गया है, इन फिल्मों ने दर्शकों का खूब मनोरंजन किया एवं लोगों के दिल को छू लिया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी गुलजार साहब फिल्म जगत के पटल पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने लगे। उनके जैसा “व्यक्तित्व” शायद ही किसी का हो एक सफल फिल्मकार, सुमधुर गीतों को लिखने वाले गीतकार, उच्च कोटि के संवाद लेखक एवं बेहतरीन निर्देशक सारे गुण मौजूद थे। जो प्रसिद्धी के उच्च शिखर तक ले जाते हैं, ऐसे नाम तो उँगलियों में गिने जा सकते थे, लेकिन सबसे खास बात चेहरे पर मोहक मुस्कान एवं मृदुभाषी चरित्र उनके लेखन एवम उच्चारण में उर्दू लफ्ज़ तथा बंगला संस्कृति की झलक साफ महसूस की जा सकती थी। उनको सुनो तो ऐसा लगता कि बस सुनते ही जाओ, उनकी नजम कभी खतम ही ना हो। उन्होंने जिंदगी के तजुर्बे को नज्मों में पिरोया था, कोई साधारण बात भी करते तो ऐसा लगता कि कोई नज्म सुना रहे हों, शहद में डूबी गुरु गंधीर आवाज किसी शायरी से कम ना लगती उनका पहनावा लक-झक करता कलफ लगा सफेद कुर्ता-पायजामा, सफेद शाल, अधपके से सफेद बाल, आँखों पर मोटा काले फ्रेम का चश्मा, उनकी इक पहचान हो गयी जब नज्म सुनाने मंच पर आते तो ऐसा लगता कोई संजीदा शायर जिन्दगी के मायने समझा रहा, जिन्दगी के किसी भी पल का जिक्र करें एक गमक सी आती..... “एक शख्सियत और लाखों-करोड़ों प्रशंसक”, शायद ही ऐसे किसी के हों..... तो ऐसे है गज़ब गुलजार साहब

गुलजार साहब की हर फिल्म में गजब का परफेक्शन देखने को मिलता है। ऐसा लगता ये किरदार बस उस फिल्म के लिए ही बने हैं, बिल्कुल भावुक एवं संवेदनशीलता से परिपूर्ण चाहे “इजाजत” फिल्म की रेखा एवम नसीरुद्दीन शाह हों जो एक स्टेशन पर बैठे-बैठे अपने अतीत को जी लेते हैं, जो संबंधों की जटिलता को दर्शाते हैं या “मीरा” फिल्म की हेमा मालिनी जो कृष्णमय हो अपना जीवन कृष्ण को समर्पित कर देती हैं, इसमें नारी के गरिमा तथा आध्यात्मिक रूप को दर्शाया गया। हास्य फिल्म “अंगूर” में अभिनय किये संजीव कुमार हों या “आंधी” फिल्म की जानी मानी बंगाल की अति सुन्दर अभिनेत्री सुचित्रा सेन और संजीव कुमार जो अलग होने के बाद फिर से मिलते हैं और अपने रिश्ते को फिर से एक मौका देते हैं, ये गुलजार साहब के बेहतरीन फिल्मों में से एक फिल्म थी और “माचिस” फिल्म उसे भी काफी सफलता मिली इस फिल्म को उस समय युवा वर्ग से जोड़ा गया था, जो काफी संवेदनशील फिल्म थी। स्त्री-पुरुष के आपसी सम्बन्ध की बारीकियाँ बखूबी बड़े पर्दे पर उकेरी, ये उनकी विशेषता थी अपने अभिनेता / अभिनेत्री से काम लेना उनको बहुत संजीदगी से आता है। ज्यादातर इनकी फिल्मों में “संजीव कुमार, जितेन्द्र, विनोद खन्ना, नसीरुद्दीन शाह, हेमा मालिनी, जया बच्चन” ने अभिनय किया। ये अभिनेता / अभिनेत्री अपने-अपने हुनर के उस्ताद हैं, जो अपने कैरेक्टर में ढल जाते थे सभी गुलजार साहब ने अपनी संजीदा फिल्मों से लोगो का भरपूर मनोरंजन किया तो साथ ही साथ लोगो को जिंदगी के विविध पहलुओं को सोचने पर भी मजबूर किया, इन्द्रधनुष के बहुरंगी रंगों से सराबोर है, सारी फिल्मों।

मीरा एवं कबीर गुलजार साहब के पसंदीदा कैरेक्टर थे। मीरा फिल्म में प्रमुख सितार वादक पंडित रवि शंकर जी ने संगीत दिया था। जिसमे मीरा बाई की भक्ति रचनाओं को गीत के रूप में संजोया एवं प्रस्तुत किया गया। इन भक्ति रचनाओं को स्वरबद्ध किया विख्यात गायिका वाणी जयराम ने, मीरा पर फिल्म बनाने के बाद “कबीर” पर “टी.वी. धारावाहिक” का निर्देशन किया, जो अपने समय का काफी प्रसिद्ध नाटक था। उर्दू के महान शायर पर आधारित “मिर्जा गालिब” टी.वी. सीरियल का निर्देशन किया एवं अपनी धीर-गंभीर आवाज में मिर्जा गालिब की नज्म लिखी एवम सुनायी “बल्ली-मारा के मोहल्ले की वो पेचीदा दलीलों के सी गलियाँ” गुलजार साहब ने काव्य से निकाल कर एक जीते जागते गालिब को प्रस्तुत कर दिया, जिसे नसीरुद्दीन शाह ने अपने हुनर से बखूबी निभाया। इस सीरियल में जगजीत सिंह की आवाज में गालिब के कलाम, गजलों का बेहतरीन संग्रह है, ऐसा लगता है कि गुलजार साहब के कैरेक्टर एक जादू करते हैं। “नसीरुद्दीन शाह” की अदाकारी एवं गालिब को जीवंत करने का अभिनय, “जगजीत सिंह” की कशिश भरी आवाज में गजलों का प्रस्तुतीकरण, अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती थी, जिसे दोनों कलाकारों ने उम्मीद से ज्यादा बेहतरीन तरीके से निभाया। एक टी.वी. सीरियल “किरदार” का भी निर्देशन किया जो विभिन्न भाषाओं के लेखकों की विभिन्न “लघु कथाओं” पर आधारित था। जिसमें ओमपुरी ने प्रमुख रोल निभाया था। जो नब्बे के दशक में काफी पसंद किया गया था, जिसमें कहानियों का प्रस्तुतीकरण दिल को छू लेने के अंदाज में पेश किया गया। जिसे हर वर्ग के दर्शक समझ सकते थे। ये ही बातें तो गुलजार साहब को सबसे अलहदा करती हैं कि कोई रिश्ता कभी खतम नहीं होता, हर रिश्ते में कुछ ना कुछ बाकी रहता है जिसे — “जिन्दगी” कहते हैं।

गुलजार साहब को लोग एक बेहतरीन “कवि एवं गीतकार” के रूप में ज्यादा जानते-पहचानते हैं, उनके लिखे गीत हर वर्ग की जुबान पर गूँजते रहते हैं, आज भी लोग उनके गीतों को सुनते एवं गुनगुनाते रहते हैं, उनके लिखे गीत उनको अन्य गीतकारों से बिल्कुल अलग करते हैं, उन्होंने आंधी, रेनकोट, पिंजर, दिल से, इजाजत कई सारी फिल्मों के गीत लिखे आंधी फिल्म का गाना “तेरे बिना जिंदगी से कोई शिकवा तो नहीं” के लिए इनको पुरस्कृत किया गया, गुलजार साहब की फिल्म हो और आर. डी. बर्मन का संगीत, किशोर कुमार एवं लता मंगेशकर जी की आवाज का जिक्र ना किया जाये तो सब अधूरा सा होगा और इजाजत फिल्म में आशा भोंसले का स्वर और आर. डी. बर्मन का संगीत एक जादू कायम करता है। दिल को छू लेती है उनकी मदहोश करने वाली आवाज और संगीत “मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है” कितना दर्द छिपा है इस गीत में, इस दर्द की अभिव्यक्ति को गुलजार साहब ही शब्द दे सकते हैं। बचपन का एक यादगार गीत “जंगल जंगल बात चली है पता चला है” जंगल बुक का गीत हम कैसे भूल सकते हैं ये। गुलजार साहब की कलम का जादू है एक और मशहूर गीत “लकड़ी की काठी, काठी पे धोड़ा” हर उम्र और हर वक्त के बच्चों की जुबान पे चढ़ा रहता था। ये भी गुलजार साहब का लिखा हुआ “मासूम” फिल्म का गीत है गुलजार साहब गीतकार के रूप में बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

गुलजार साहब के कुछ प्रचलित “संगीत एल्बम” भी हैं। जिनमें से एक आर. डी. बर्मन साहब का संगीत एवं आशा भोंसले के स्वर से सजा “दिल पड़ोसी है” जिसमे आशा भोंसले का सुप्रसिद्ध गजल गायन है — “जाने दो मुझे जाने दो” बहुत मनमोहक है एक और “भीनी भीनी भोर आई” है जो शास्त्रीय संगीत की याद दिलाती है, बहुत ही यादगार “मरासिम” एल्बम है। जो जगजीत सिंह की आवाज में है गुलजार साहब एवं जगजीत साहब का साथ बिल्कुल अनूठा है, उनके गाये हुए गीत एक उम्र को जीते हैं “हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं छूटा करते”, “शाम से आँख में नमी सी है” “विशाल” एल्बम की गजलों गुलाम अली साहब के साथ है। गुलाम अली पकिस्तान के मशहूर गजल गायक हैं। इनकी गजल गायकी सुप्रसिद्ध है। दुनिया भर में इनकी आवाज गूँजती है। इनके स्वर में सजी गजल “खुशबू जैसे लोग मिले अफसाने में” या फिर “कोई अटका हुआ है पल शायद” इत्यादि बहुत जबरदस्त है, सुनने वाले दिल थाम के घंटों इनको सुनते रहते हैं। गुलजार साहब ने कई बेहतरीन “किताबों” का लेखन किया जिनमें से चौरस रात, जानम, एक बूंद चाँद, रात चाँद और मैं, रात पश्मीने की इत्यादि बहुत प्रसिद्ध हैं ये पुस्तकें कुछ लघु कथाओं के रूप में संजोई गयी हैं तो कुछ में गजलों का संग्रह है, कुछ कथा संग्रह हैं तो कुछ कवितायें हैं लेकिन सब दिल को छू लेती हैं जिनमें से “रात पश्मीने की” एक कविता संग्रह है जिसमें बोस्की, कायनात, खुदा, वक्त, फसादात, मुंबई, बादल, आईना इत्यादि नामों की कविताओं का अद्भुत संग्रह है जो जिन्दगी की तलख हकीकत को बयां करती है।

गुलजार साहब को बहुत से पुरस्कारों से नवाजा गया। उन्हें अनगिनत बार “फिल्मफेयर पुरस्कार” प्राप्त हुआ। जिसमें वर्ष 1977, 1979, 1980, 1983, 2002, 2005 इत्यादि, वर्ष 1993 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, वर्ष 2002 में “साहित्य एकादमी पुरस्कार”, वर्ष 2004 में “पद्म भूषण पुरस्कार”, वर्ष 2003, 2006 एवं 2011 में “जी सिने अवार्ड”, वर्ष 2009 में “ऑस्कर पुरस्कार”, वर्ष 2010 में “ग्रेमी पुरस्कार”, वर्ष 2013 में “दादा साहेब फाल्के पुरस्कार” वर्ष 2018 में सर्वश्रेष्ठ गीतकार के लिए “स्क्रीन अवार्ड” इत्यादि गुलजार साहब को बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनकी तारीफ में जितना भी कहा जाये कम है, इक महान हस्ती, इक बेहतरीन निर्देशकीय क्षमता के सागर, इक प्रतिभाशाली गीतकार, शायर एवं कवि दमदार संवाद लेखक..... तो ऐसे है..... हमारे गजब गुलजार साहब



गुलजार

जन्म - 18 अगस्त 1934

- नीरु अवस्थी
कार्याधी
म.रे.प्र.(का.), वाराणसी



निज भाषा उन्नति अहे
सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को सूल
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

अनुवादक एक भाषा के लिखित पाठ को लेखन, विश्लेषण और संपादन द्वारा लक्ष्य भाषा में परिवर्तित करने का कार्य करता है। अनुभव और विशेषज्ञता के साथ कुशल अनुवादकों की सेवाओं की हमेशा उच्च मांग होती है और वे बहुत अच्छी कमाई भी कर सकते हैं। भाषा की व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण, मशीनी अनुवाद मानव अनुवादकों की जगह कभी नहीं ले सकता। विभिन्न भाषाओं में कई अर्थ वाले शब्द होते हैं। जो बात एक भाषा में काम करती है, जरूरी नहीं कि वह दूसरी भाषा में भी वैसे ही काम करे। मशीन शब्दों को संदर्भ से नहीं जोड़ सकती। मानव अनुवादक और दुभाषिए कहीं अधिक विश्वसनीय और प्रभावी होते हैं।

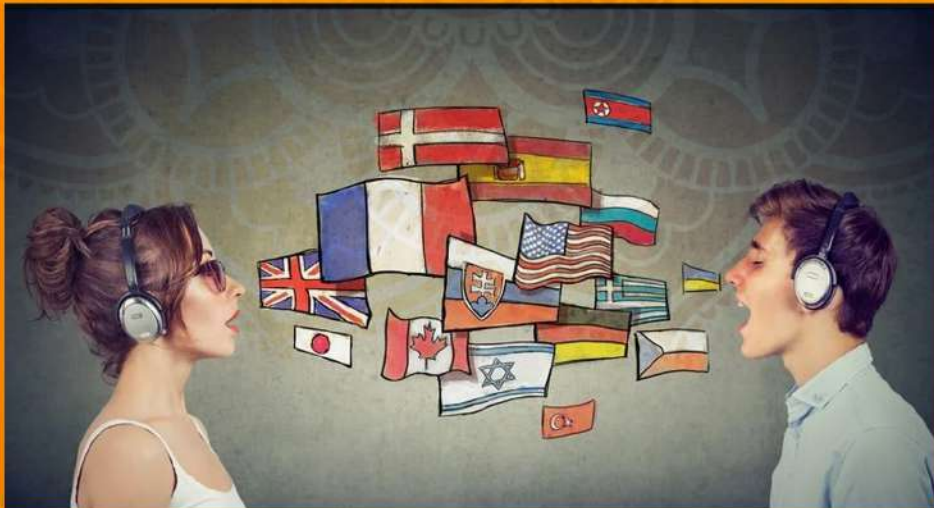
कोई व्यक्ति 3-4 साल इस क्षेत्र में कार्य करके अनुवादक बन सकता है। हालाँकि, वित्तीय, चिकित्सा, तकनीकी, साहित्यिक और पेशेवर कानूनी और प्रमाणित अनुवाद जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सफलता और अधिकार प्राप्त करने में कई साल लगते हैं। साहित्य में अधिक रुचि रखने वाले छात्र विदेशी भाषाओं की साहित्यिक कृतियों का अनुवाद कर सकते हैं। विज्ञान, अनुसंधान और प्रबंधन पुस्तकों को परिवर्तित करने का बाजार भी बढ़ रहा है। प्रकाशन उद्योग में भी नौकरियाँ हैं। कई कंपनियों को अपने व्यावसायिक संचार, लाइव इवेंट, बैठकों, सम्मेलनों या आवश्यक कार्यों में दस्तावेजीकरण के लिए अनुवादकों की आवश्यकता होती है। कई अनुवाद सेवा प्रदाता विदेशी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले लोगों को नियुक्त करते हैं। पर्याप्त लाभ, बढ़ते दायरे और लचीले कामकाजी घंटों के कारण अनुवादक का जॉब भाषाओं में सबसे अधिक मांग वाले करियर विकल्पों में से एक है।

दुभाषिया के रूप में नौकरी के अवसर

एक दुभाषिया के रूप में आपको यह समझना होगा कि क्या संप्रेषित किया गया है, उसे सटीक बनाए उसे और सटीक मौखिक अभिव्यक्तियों के द्वारा अभिव्यक्त करें। इसके अतिरिक्त, शिष्टाचार, हावभाव और शिष्टाचार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुभाषिया का कार्य विभिन्न प्रकार का हो सकता है। वे वास्तविक समय में व्याख्या करते हैं, बैठकों, वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग, भाषणों, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग आदि के लिए उपयोग किए जाते हैं।

इसमें संपर्क व्याख्या या लगातार व्याख्या भी होती है। इस स्थिति में, वक्ता अपना संदेश सुनाता है और फिर कुछ देर के लिए रुक जाता है। और फिर, दुभाषिया दर्शकों को बोले गए भाषण को संबंधित भाषा में डिकोड करता है। एक सफल दुभाषिया बनने के लिए, व्यक्ति को दोनों भाषाओं का धाराप्रवाह वक्ता या जानकार होना आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उन लोगों के बीच आगे-पीछे संवाद करते हैं जो कोई आम भाषा साझा नहीं करते हैं। वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और टेलीकॉन्फ्रेंसिंग जैसी नई तकनीक की बदौलत, अब देशों के बीच यात्रा किए बिना कर्मचारियों और अन्य देशों में उनके समकक्षों के बीच बैठकें और सम्मेलन आयोजित करना संभव है। इन दिनों भारत में दुभाषियों के लिए बहुत सारे विकल्प मौजूद हैं।

विदेशी कंपनियों के बढ़ते प्रवेश और उनके यूरोपीय, एशियाई और अमेरिकी समकक्षों द्वारा कंपनियों को बड़े पैमाने पर परियोजनाओं की आउटसोर्सिंग के लिए दुभाषियों की माँग है। दुभाषिया के रूप में कार्य करना बहुत लाभदायक हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितने अनुभवी हैं। आप मीडिया हाउस, पर्यटन केंद्र, खेल क्लब, अंतर्राष्ट्रीय फर्म, निर्यात आदि के लिए भी काम कर सकते हैं। इसमें करियर की संभावनाएँ अनंत हैं।



प्रूफरीडर, संपादक और सामग्री लेखक के रूप में करियर

प्रूफरीडिंग सटीकता, वर्तनी, व्याकरण और शैली के लिए भाषा की समीक्षा है। यह सुनिश्चित करता है कि आपके दस्तावेज में कुछ भी गलत वर्तनी, छोड़ा या गलत तरीके से नहीं डाला गया है। कई कंपनियाँ त्रुटि-मुक्त पाठ तैयार करने के लिए इन-हाउस का उपयोग करती हैं या प्रूफरीडर को नियुक्त करती हैं। एक संपादक के लिए भी करियर के अनेक अवसर हैं। वे आपके लेखन के प्रवाह, शैली और समग्र गुणवत्ता में सुधार करने के इरादे से वाक्यों और पैराग्राफों को फिर से लिखते हैं। लेखक कभी भी शैली से बाहर नहीं जाता। छोटी कंपनियों से लेकर बड़ी एमएनसी तक कंटेंट राइटर की मांग हमेशा से रही है। हालाँकि, इंटरनेट और प्रौद्योगिकी के आने से, उत्कृष्ट लेखकों की आवश्यकता कई गुना बढ़ गई है। यदि आप किसी भी भाषा में पारंगत हैं और एक रचनात्मक विचारक हैं जो अच्छा लिख सकते हैं, तो नौकरी के अवसर अपार हैं।

अनुवादक और दुभाषिया कैसे बनें?

किसी भाषा या विदेशी भाषा के अपने ज्ञान के साथ, आप किसी कंपनी के लिए अनुवादक और दुभाषिया के रूप में काम कर सकते हैं। इसके अलावा किसी एजेंसी या सलाहकार या स्वतंत्र फ्रीलांसर के रूप में भी संभावना है। इसे सफलतापूर्वक करने के लिए, आपको कुछ महत्वपूर्ण कौशल की आवश्यकता है, जिनमें शामिल हैं —

1. अत्यधिक उच्च भाषा क्षमता

एक सफल पेशेवर अनुवादक या दुभाषिया बनने के लिए, आपको दोनों भाषाओं (स्रोत और लक्ष्य भाषा) में लगभग मूल दक्षता की आवश्यकता होती है। नौकरी के लिए कम से कम दो में उच्च स्तर की भाषा दक्षता की आवश्यकता होती है। एक बार जब आप उच्च स्तर की योग्यता हासिल कर लेते हैं तो अनुवादकों के लिए कुछ विशेष पाठ्यक्रम भी होते हैं, उदाहरण के लिए, अनुवाद डिप्लोमा या डिग्री कोर्स, विदेशी भाषाओं डिप्लोमा या डिग्री कोर्स।

2. शैक्षणिक पृष्ठभूमि या क्षेत्र में अनुभव

यह गलत धारणा है कि अनुवादक को हर चीज का अनुवाद करना होगा। लेकिन ऐसा नहीं है। अनुवादक विशेष होते हैं, और आपको केवल विशेषज्ञता के एक या कुछ क्षेत्रों (जैसे, पर्यटन, कानून, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, और अधिक) से संबंधित होने की आवश्यकता है। काम शुरू करने से पहले आपको यह जानना होगा कि अनुवाद या व्याख्या कैसे करें। अधिकांश नौकरियों के लिए अनुभव भी एक शर्त है। भाषा संस्कृति और रीति-रिवाजों को प्रतिबिंबित करती है और उससे प्रभावित और आकार लेती है। पेशेवर भाषा विशेषज्ञों को भी दो संस्कृतियों के ज्ञान का उपयोग करना चाहिए। गहरे सांस्कृतिक संदर्भ के बिना अनुवाद और व्याख्या त्रुटिपूर्ण, गलत और खतरनाक होगी।

3. उत्कृष्ट लेखन और अनुवाद कौशल

आपके पास लक्षित भाषा में बेहतर लेखन, संपादन, शब्दावली और व्याकरण कौशल भी होना चाहिए। अनुवादक और दुभाषिया को उस भाषा के गहन ज्ञान और समझ की आवश्यकता होती है जिसका वे अनुवाद कर रहे हैं ताकि भाषा में निहित किसी भी अंतर्निहित अर्थ को खोने से बचा जा सके। इसमें सामान्यता, घटियापन और निष्ठाहीनता के लिए कोई जगह नहीं है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अनुवादक कौशल शुरुआती भाषा कौशल से काफी अलग है।

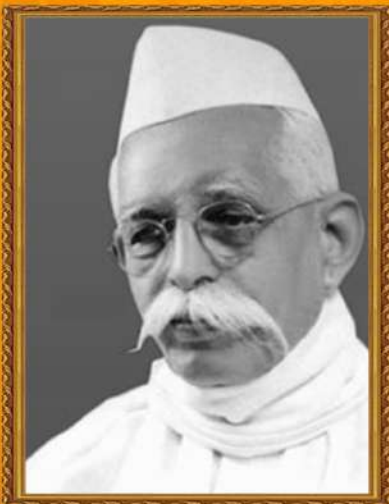
कोई व्यक्ति किसी विशेष भाषा में आश्चर्यजनक रूप से पारंगत हो सकता है लेकिन फिर भी एक बेकार और अक्षम अनुवादक बन सकता है। और यदि आप एक स्वतंत्र अनुवादक और दुभाषिया बनने जा रहे हैं। आपको मार्केटिंग और सामान्य व्यावसायिक अभ्यास में कुशल होना होगा क्योंकि फ्रीलांस बाजार अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है।



पैसे कमाने के अवसर

इस क्षेत्र में काम करने की स्थितियाँ और भाषाओं से संबंधित वेतन उत्कृष्ट हैं, जो अनुभव और विशेषज्ञता के साथ काफी बढ़ सकते हैं। दुभाषिए आमतौर पर प्रति घंटे या आधे दिन या पूरे दिन की दर से शुल्क लेते हैं। यदि आपके भाषा संयोजन और विशेषज्ञता की मांग बहुत अधिक है और लोग आपके बारे में जानते हैं, तो आपको अच्छे पैसे मिलेंगे। पूर्णकालिक अनुवादक के लिए वेतन 40,000 से 1 लाख प्रति माह होता है। आप फ्रीलांस भाषा विशेषज्ञ के रूप में भी काम कर सकते हैं और अच्छे पैसे कमा सकते हैं। भारत में अनुवादक और दुभाषिया के रूप में विदेशी भाषा की नौकरियों की मांग हमेशा अधिक रहती है। यदि आपके पास मांग वाली भाषाओं में अनुभव, रेफरल और ठोस बायोडेटा है या जहां प्रतिस्पर्धा कम है, जैसे चीनी, जापानी, कोरियाई, तुर्की आदि तो आपको एक औसत दुभाषिया और अनुवादक की तुलना में बहुत अधिक भुगतान किया जाएगा। चूंकि जर्मन, फ्रेंच और स्पैनिश आदि व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाएँ हैं, तो प्रसिद्ध यूरोपीय भाषाओं के अनुवादक और दुभाषिया की मांग अधिक है। इतालवी, फारसी, पुर्तगाली, बहासा आदि जैसी कम सिखाई जाने वाली भाषाओं के लिए भी बाजार की अपार संभावनाएँ हैं। सीखने के लिए सही भाषा का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। अनुवादक नौकरियाँ नियमित पूर्णकालिक या अंशकालिक फ्रीलांसर हो सकती हैं। 21वीं सदी ने अनुवादक और दुभाषिया को करियर विकल्प के रूप में अपनाने वाले लोगों के लिए व्यापक संभावनाएं खोल दी हैं।

- अजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
मरेप्र कार्यालय
वाराणसी



देवनागरी ध्वनि शास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

- रविशंकर शुक्ल



माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी वाराणसी के वाजिदपुर में आयोजित एक समारोह से फलक अनावरण कर गाजीपुर सिटी-औड़िहार एवं औड़िहार-जौनपुर रेल खण्ड के दोहरीकरण, भटनी-औड़िहार रेल खण्ड के विद्युतीकरण का लोकार्पण

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार 07 जुलाई, 2023 को सायं वाराणसी के वाजिदपुर में आयोजित एक समारोह से फलक अनावरण कर गाजीपुर सिटी-औड़िहार एवं औड़िहार-जौनपुर रेल खण्ड के दोहरीकरण का लोकार्पण, भटनी-औड़िहार रेल खण्ड के विद्युतीकरण का लोकार्पण, उत्तर प्रदेश राज्य में शत-प्रतिशत रेल विद्युतीकरण का लोकार्पण, डेडीकेटेड फ्रेट कोरिडोर पं० दीन दयाल उपाध्याय जं.—सोननगर नई रेल लाइन का लोकार्पण तथा व्यासनगर-पं० दीन दयाल उपाध्याय जं. रेल फ्लाईओवर का शिलान्यास किया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्रीमती आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्या, उप मुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक, भारी उद्योग मंत्री, भारत सरकार श्री महेन्द्र नाथ पाण्डेय एवं वरिष्ठ क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

स्वागत संबोधन के उपरान्त प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वाजिदपुर, वाराणसी में आयोजित समारोह में 8200 करोड़ रुपये से ज्यादा लागत की रेल परियोजनाओं का लोकार्पण / शिलान्यास किया। इसके अन्तर्गत गाजीपुर सिटी-औड़िहार एवं औड़िहार-जौनपुर रेल खण्ड के दोहरीकरण, भटनी-औड़िहार रेल खण्ड के विद्युतीकरण, उत्तर प्रदेश राज्य में शत-प्रतिशत विद्युतीकरण एवं डेडीकेटेड फ्रेट कोरिडोर पं० दीन दयाल उपाध्याय जं.—सोननगर नई लाइन का लोकार्पण तथा व्यासनगर-पं० दीन दयाल उपाध्याय जं. रेल फ्लाईओवर का शिलान्यास किया गया।

रेल खण्डों पर बढ़ते यातायात के दबाव को कम करने के लिये रेल खण्डों का दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण किया जा रहा है। गाजीपुर सिटी-औड़िहार (40 किमी.) एवं औड़िहार-जौनपुर (60 किमी.) रेल खण्डों का दोहरीकरण का कार्य विद्युतीकरण के साथ पूर्ण किया गया है। भटनी-औड़िहार रेल खण्ड (125 किमी.) के विद्युतीकरण को पूरा किया गया, जिसके फलस्वरूप विद्युत इंजन चालित ट्रेनें गोरखपुर से सीधे औड़िहार-वाराणसी होकर अन्य महानगरों के लिये चलाई जा रही हैं। शत-प्रतिशत विद्युतीकरण के तहत उत्तर प्रदेश राज्य के सभी बड़ी रेल लाइन नेटवर्क को पूर्ण रूप से विद्युतीकृत कर लिया गया है, जिससे इम्पोर्टेड डीजल की खपत में भारी कमी आई है, जिससे पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करने में मदद मिलेगी। पूर्वी डेडीकेटेड फ्रेट कोरिडोर पर 137 किमी. लम्बे न्यू दीन दयाल उपाध्याय-न्यू सोननगर नई लाइन का निर्माण पूरा हो चुका है। यह रेल खंड झारखंड एवं पश्चिम बंगाल के प्रमुख कोयला क्षेत्रों को उत्तर भारत के बिजली केंद्रों से जोड़ेगा। आयरन एवं स्टील सहित अन्य आवश्यक वस्तुओं की दुलाई में तेजी आवेगी। 8.62 किलोमीटर लम्बे व्यासनगर-पं० दीन दयाल उपाध्याय जं. रेल फ्लाईओवर का निर्माण किया जायेगा। इस रेल फ्लाईओवर के निर्माण से पं० दीन दयाल उपाध्याय जं. पर आने वाली माल गाड़ियों को पं० दीन दयाल उपाध्याय जं. में सरफेस क्रॉसिंग के बिना व्यासनगर से वाराणसी एवं लखनऊ की ओर मोड़ा जा सकेगा।

इसके पूर्व आज उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी जी ने बताया की उत्तर प्रदेश के लिये भारतीय रेल की 8700 करोड़ रुपये से ज्यादा की परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास आज किया गया है। प्रमुख नगरों को उन्नत तकनीक की सेमी हाई-स्पीड, सुरक्षित एवं आरामदायक बंदे भारत एक्सप्रेस की सेवायें उपलब्ध कराने के क्रम में 02 बंदे भारत ट्रेनें जोधपुर से अहमदाबाद (साबरमती) तथा गोरखपुर से लखनऊ वाया अयोध्या चलाई जा रही हैं।



मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने बनारस—प्रयागराज रामबाग रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण

करने का निर्देश दिया। मंडल रेल प्रबंधक अपने विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान बनारस—प्रयागराज रामबाग रेल खण्ड पर परिचालन में संरक्षा, विकास कार्यों की प्रगति, यात्री सुविधाओं, साफ—सफाई, पेयजल की उपलब्धता, अस्थाई सतर्कता आदेशों का अनुपालन एवं संरक्षा से जुड़े कर्मचारियों के सक्षमता एवं पी एम ई प्रमाण पत्रों की जाँच की भी कर रहे हैं।

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने 26 जुलाई, 2023 को रेल परिचालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा एवं यात्रियों की सुख सुविधाओं में सुधार हेतु इस रेल खण्ड पर चल रहे सुधार एवं विकास कार्यों हेतु बनारस प्रयागराज रामबाग रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने माधोसिंह एवं ज्ञानपुर रोड स्टेशनों का भी गहन निरीक्षण कर स्टेशन पैनल, स्टेशन भवन, प्लेटफॉर्म, पैदल उपरिगामी पुल, फूड एवं वेंडिंग स्टाल, प्रतीक्षालय, सर्कुलेटिंग एरिया, प्रवेश एवं निकास मार्ग, साफ—सफाई तथा रख—रखाव आदि का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने संरक्षा से जुड़े रिले रूम, आई पी एस रूम, पॉइंट्स क्रासिंग, चाभी हस्तांतरण, अनुरक्षण पंजिका, निरस्तीकरण काउन्टर एवं रजिस्टर आदि का निरीक्षण किया और संरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करने का निर्देश दिया। इसके पश्चात उन्होंने रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं एवं प्रगतिशील यात्री सुविधा विकास कार्यों एवं स्टेशन विस्तारीकरण के कार्यों का निरीक्षण किया और संबंधित को उक्त कार्य उच्च गुणवत्तायुक्त मेटेरियल से समय सीमा में पूरा

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने 30 जुलाई, 2023 को रेल परिचालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा एवं स्टेशन पुनर्विकास कार्य योजना के अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों के साथ यात्री सुविधाओं में उन्नयन हेतु इस रेल खण्ड पर चल रहे विकास कार्यों हेतु औड़िहार—छपरा रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने छपरा जं स्टेशन की पुनर्विकास कार्य योजनाओं की रूपरेखा देखी और कार्य योजना के क्रियान्वयन पर संबंधित अधिकारियों से विमर्श किया। इस दौरान उन्होंने छपरा सेकेण्ड इन्ट्री के कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने छपरा स्टेशन का निरीक्षण कर स्टेशन पैनल, स्टेशन भवन, प्लेटफॉर्म, पैदल उपरिगामी पुल, फूड एवं वेंडिंग स्टाल, प्रतीक्षालय, सर्कुलेटिंग एरिया, प्रवेश एवं निकास मार्ग तथा यात्री सुख सुविधाओं का संज्ञान लिया। इस दौरान उन्होंने संरक्षा से जुड़े उपकरणों एवं विफलता पंजिकाओं आदि का निरीक्षण किया और संरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करने का निर्देश दिया। इसके पश्चात उन्होंने रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं, कू लॉबी तथा निर्माणधीन गार्ड / लोको रनिंग रूम का निरीक्षण किया। इसके पश्चात उन्होंने एन ई रेलवे मजदुर यूनियन छपरा की मांगों को सुना और युक्तियुक्त मांगों को अविलम्ब पूरा करने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही प्रगतिशील यात्री सुविधा विकास कार्यों एवं स्टेशन विस्तारीकरण के कार्यों का निरीक्षण किया और संबंधित को तदनुसार निर्देश दिया। ज्ञातव्य हो कि नए मंडल रेल प्रबंधक का यह पहला छपरा दौर था जिसमें उन्होंने स्टेशन के सभी विभाग प्रमुखों एवं कर्मचारियों का परिचय प्राप्त किया। मंडल रेल प्रबंधक अपने विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान औड़िहार—छपरा रेल खण्ड पर परिचालन में संरक्षा, विकास कार्यों की प्रगति, यात्री सुविधाओं, साफ—सफाई, पेयजल की उपलब्धता, अस्थाई सतर्कता आदेशों का अनुपालन एवं संरक्षा से जुड़े कर्मचारियों के रूटीन प्रशिक्षण एवं पी एम ई प्रमाण पत्रों की भी जाँच की।



मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने छपरा स्टेशन का निरीक्षण किया



**मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी मऊ-शाहगंज रेल खण्ड का
विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण**

प्लेटफॉर्म, यात्री शेड, पैदल उपरिगामी पुल, फूड एवं वेंडिंग स्टाल, प्रतीक्षालय, सिक्यूरिटी एरिया, प्रवेश एवं निकास मार्ग, साफ-सफाई तथा रख-रखाव आदि का निरीक्षण किया।

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने 01 अगस्त, 2023 को रेल परिचालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा, यात्री सुख सुविधाओं के विकास कार्यों एवं इस रेल खण्ड पर चल रहे परिचलनिक सुधार एवं विकास कार्यों हेतु मऊ-शाहगंज रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आजमगढ़ स्टेशन पर स्टेशन सुंदरीकरण एवं अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत चल रहे विकास कार्यों का गहन निरीक्षण किया और संबंधित को सभी कार्य गुणवत्ता मानकों के साथ निर्धारित समय सीमा में पूरा करने का निर्देश दिया। इसके उपरान्त उन्होंने अमृत भारत योजना के अंतर्गत 27.05 करोड़ की लागत से आजमगढ़ स्टेशन को पुनर्विकसित कर अत्याधुनिक बनाने के विभिन्न कार्य योजनाओं को रेखा मानचित्रों के माध्यम से देखा। इसके साथ ही उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रस्तावित अमृत भारत स्टेशन कार्यक्रम कार्यक्रम के स्थान को चिन्हित कर संबंधित अधिकारियों को आयोजन के लिए विभिन्न कार्य करने के लिए निर्देशित किया गया।

इसके पश्चात् उन्होंने आजमगढ़ स्टेशन पैनल, स्टेशन भवन,

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत भारतीय रेल के 508 स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 06 अगस्त, 2023 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रिमोट का बटन दबाकर किया गया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक ऐतिहासिक पहल के तहत आज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देश के कोने-कोने में 508 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य की आधारशिला रखी। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत देश के 1309 महत्वपूर्ण स्टेशनों का 25000 करोड़ रुपये की लागत से पुनर्विकास किया जाएगा। इस अवसर पर उन्होंने रेलवे को देश भर में लोगों के परिवहन का पसंदीदा साधन बताते हुए रेलवे स्टेशनों पर विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के महत्व पर जोर दिया। स्टेशन पुनर्विकास के अंतर्गत शहर के दोनों किनारों को समुचित रूप से जोड़ते हुए इन स्टेशनों को 'सिटी सेंटर' के रूप में विकसित करने के लिए मास्टर प्लान तैयार किए जा रहे हैं। यह एकीकृत दृष्टिकोण रेलवे स्टेशन के आसपास के क्षेत्र पर केंद्रित शहर के समग्र शहरी विकास के विजन से प्रेरित है। ये 508 स्टेशन देश के 27 राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में स्थित हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश में 55, राजस्थान में 55, बिहार में 49, महाराष्ट्र में 44, पश्चिम बंगाल में 37, मध्य प्रदेश में 34, असम में 32, ओडिशा में 25, पंजाब में 22, गुजरात में 21, तेलंगाना में 21, झारखंड में 20, आंध्र प्रदेश में 18, तमिलनाडु में 18, हरियाणा में 15, कर्नाटक में 13 स्टेशन शामिल हैं।



**माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा
अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत भारतीय रेल के
508 स्टेशनों में बनारस स्टेशन का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के
माध्यम से पुनर्विकास का शिलान्यास**



वीर शहीदों के सम्मान में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के अंतर्गत अमृत कलश के साथ शपथ

'मेरी माटी-मेरा देश' अभियान का सुझाव देते हुए कहा था कि इसकी टैगलाइन 'मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन' किया है। अभियान के अनुसार, राष्ट्रव्यापी अभियान राष्ट्र और बहादुरों की उपलब्धियों का जश्न मनाने को लेकर है। प्रधानमंत्री जी ने अपने मन की बात एपिसोड 103 में कहा था, "इसके तहत हमारे अमर शहीदों की याद में देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। इस अभियान के तहत देशभर में 'अमृत कलश यात्रा' भी आयोजित की जा रही है जो देश के कोने-कोने से 7500 कलशों में मिट्टी लेकर 'अमृत कलश यात्रा' देश की राजधानी दिल्ली पहुंचेगी। यह यात्रा अपने साथ देश के विभिन्न हिस्सों से पौधे भी लेकर आएगी।

वाराणसी मंडल के बनारस, प्रयागराज रामबाग, मऊ, भटनी, चोरी-चौरा, बलिया एवं छपरा, स्टेशनों पर "विभाजन की विभीषिका" पर आधारित फोटो प्रदर्शनी



वाराणसी मंडल के बनारस, प्रयागराज रामबाग, मऊ, भटनी, चोरी-चौरा, बलिया एवं छपरा, स्टेशनों पर "विभाजन की विभीषिका" पर आधारित फोटो प्रदर्शनी लगाई गयी। इसी क्रम में बनारस स्टेशन पर फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन आज सेवानिवृत्त प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री आर० पी० सिंह द्वारा किया गया। "विभाजन की विभीषिका" पर आधारित फोटो प्रदर्शनी में संस्कृति मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए भारत के विभाजन संबंधी फोटोग्राफ तथा त्रासदी की विभीषिका को विवरण सहित प्रदर्शित किया गया है। इसके पूर्व सेवानिवृत्त प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री आर० पी० सिंह एवं अधिकारियों द्वारा बनारस स्टेशन के सामान्य यात्री हाल में राष्ट्रगान गाया गया। ज्ञातव्य हो की वाराणसी मंडल के 07 स्टेशनों बनारस, प्रयागराज रामबाग, मऊ, भटनी, चोरी-चौरा, बलिया एवं छपरा, स्टेशनों पर रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार "विभाजन की विभीषिका" पर आधारित फोटो प्रदर्शनी लगाई गयी है जिसमें संस्कृति मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए भारत के विभाजन संबंधी फोटोग्राफ तथा त्रासदी की विभीषिका को विवरण सहित दर्शाया गया है। इन प्रदर्शनियों का उद्घाटन वयोवृद्ध सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों द्वारा किया गया।

वाराणसी मंडल पर स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगांठ के का आयोजन



पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगांठ के अवसर पर स्वतंत्रता दिवस समारोह पूरी भव्यता एवं विस्तार के साथ मनाया गया। परेड की सलामी के पश्चात मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएँ देते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि 76 वर्ष पूर्व हमारा देश आज ही के दिन स्वतंत्र हुआ तथा हमें अंग्रेजी दासता से मुक्ति मिली थी। मैं देश की स्वतंत्रता हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों एवं देशभक्तों को नमन करता हूँ। इस राष्ट्रीय पर्व पर मैं सीमा पर तैनात सेना एवं सुरक्षा बल के जवानों के पराक्रम एवं कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करता हूँ, जो विषम परिस्थितियों में भी देश की एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपना अतुलनीय योगदान दे रहे हैं। पूर्वोत्तर रेलवे का वाराणसी मंडल अपने 204 स्टेशनों के माध्यम से यात्रियों को सुरक्षित, संरक्षित एवं आरामदायक यात्रा सुविधा उपलब्ध करा रहा है। हम पूर्वोत्तर रेलवे की आधारभूत संरचना एवं कार्यप्रणाली का आधुनिकीकरण कर यात्रियों को बेहतर एवं द्रुतगामी सुविधा प्रदान करने के लिये निरन्तर प्रयासरत हैं। कोरोना संक्रमण से उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमारे रेलकर्मियों ने देश सेवा में अतुलनीय योगदान दिया है। देश की एकता एवं अखण्डता के प्रति निष्ठा व्यक्त करने हेतु भारतीय रेल के 75 व्यस्ततम स्टेशनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के क्रम में अब तक वाराणसी मंडल के 12 स्टेशनों पर 100 फीट ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज लगाये गये हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगांठ के अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे मिनी स्टेडियम, लहरतारा में ध्वजारोहण के पश्चात् प्रेक्षागृह स्थित स्काउट डेन पर भी राष्ट्र ध्वज फहराया इस अवसर पर भारत स्काउट एण्ड गाइड जिला संघ के सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतिकरण एवं भारत स्काउट एण्ड गाइड जिला संघ के स्काउट एण्ड गाइडों ने देशभक्ति पर आधारित शहीद चन्द्रशेखर आजाद पर नुक्कड़ नाटक का मंचन कर उपस्थित दर्शकों को भाव विभोर किया। इसके अतिरिक्त स्काउट स्किल्स का भी प्रदर्शन किया गया इस अवसर पर जिला आयुक्त स्काउट एण्ड गाइड एवं वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (कैरेज एण्ड वैगन) श्री अनुभव पाठक ने सभी का स्वागत करते हुए बताया पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला संघ वाराणसी के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हुए स्काउट एवं गाइड्स सदस्यों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों यथा जागरूकता रैली, नुक्कड़ नाटक, जल सेवा एवं जागरूकता अभियानों में प्रतिभा किया। आज स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के अमृत महोत्सव का समापन दिवस को बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमें स्काउट्स एवं गाइड्स सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें देशभक्ति गीत पर नृत्य एवं एक प्शाहिदों को नमन लघु नाटिका के माध्यम से आज के दिन उनके बलिदान को याद किया गया।



मंडल रेल प्रबंधक ने प्रेक्षागृह स्थित स्काउट डेन पर भी राष्ट्र ध्वज फहराया



वाराणसी मंडल पर स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 08 कर्मचारियों को मंडल स्तर पर प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया

पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वतंत्रता दिवस समारोह पूरी भव्यता एवं विस्तार के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे मिनी स्टेडियम, लहरतारा में आयोजित भव्य समारोह में अपनी कर्तव्यपरायणता का परिचय देकर रेल सुरक्षा एवं संरक्षा में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 08 कर्मचारियों को मंडल स्तर पर प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया था। मंडल कार्यालय पर कार्यरत कर्मचारी गण उपस्थित थे। मंडल स्तर पर मंडल रेल प्रबंधक से पुरस्कार प्राप्त करने वालों में सर्व श्री विजय बहादुर / PWI संरक्षा, अविनाश कुमार मिश्रा / मुख्य यातायात नियंत्रक, सुबोध सिंह / संरक्षा सलाहकार ऑपरेशन, शशांक शर्मा / संरक्षा सलाहकार सिगनल, पवन कुमार / कांटा वाला, आनन्द कुमार प्रजापति / जे ई कर्षण, राजकुमार वर्मा / तकनीशियन तथा सुनील कुमार / विद्युत सिगनल अनुरक्षक भटनी शामिल थे।

छपरा कोचिंग डिपो में संस्थापित हुआ ऑटोमेटिक कोच वॉशिंग प्लांट जिसमें लगी



पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल के छपरा कोचिंग डिपो में ऑटोमेटिक कोच वॉशिंग प्लांट Automatic Coach Washing Plant की कमिशनिंग दिनांक 20.08.2023 को किया गया है। इस प्लांट की वॉशिंग की क्षमता 70 से 80 यान प्रति घंटा एवं 300-350 यान प्रति दिन है। इस प्लांट के द्वारा पूरे रैक (24 कोच) की धुलाई 7 से 8 मिनट में की जा सकती है। यह एक कोच की धुलाई में केवल 300 लीटर पानी का उपयोग करता है जबकि पारंपरिक धुलाई कि व्यवस्था से लगभग हैलीटर प्रति कोच पानी की खपत होती 1500। इससे प्रति कोच लगभग 1200 लीटर पानी की बचत होती है। प्लांट द्वारा धुलाई हेतु उपयोग किया जाने वाला केमिकल पर्यावरण अनुकूल है। यह सुविधा अपशिष्ट उपचार संयंत्र और जल मृदुकरण संयंत्र से सुसज्जित है जो पानी का पुन उपयोग और पुनर्चक्रण करने में मदद करता है। यह केवल 20% Fresh Water का इस्तेमाल करता है शेष 80% पानी Dirty Water को Recycle करके उपयोग करता है। कम पानी के उपयोग और पुनर्नवीनीकरण के साथ, एक ACWP कोच धोने के पारंपरिक तरीकों की तुलना में 96% कम पानी की खपत करता है।



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में राजभाषा सप्ताह का शुभारम्भ एवं मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

मंडल रेल प्रबंधक ने कहा की हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस बैठक आप सभी का स्वागत है। जैसा कि आप जानते हैं कि 14 सितंबर, 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी उपलक्ष्य में पूर्व की भांति इस वर्ष भी राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है वास्तविकता तो यह है कि राजभाषा हिंदी से जुड़ने या इसे याद करने का कार्य कोई एक दिन नहीं होना चाहिए बल्कि वर्ष पर्यंत लगाव या जुड़ाव बना रहना चाहिए। केवल कार्यालयी कार्यों में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक कार्य में हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि इसी से हमारी पहचान बनती है हमें राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए गर्व की अनुभूति भी होना चाहिए।

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता परबवाड़ा की शपथ दिलाते हुए



सम्पूर्ण भारतीय रेलवे के साथ-साथ वाराणसी मंडल पर 16 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' थीम पर स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसी क्रम में वाराणसी मंडल पर स्वच्छता पखवाड़े-2023 के अंतर्गत 16 सितम्बर, 2023 को स्वच्छता जागरूकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा मंडल कार्यालय पर कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। उसके लिए समय दूंगा। हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा। मैं न स्वयं गंदगी करूंगा न ही किसी और को करने दूंगा। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (आपरेशन) श्री राजेश कुमार सिंह, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा) श्री रोशन लाल यादव, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेश सिंह, समेत सभी मंडलीय अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे। स्वच्छता पखवाड़े के क्रम में वाराणसी मंडल के प्रमुख स्टेशनों, यूनिटों, कार्यालयों एवं कोचिंग डिपो पर विभाग प्रमुखों द्वारा कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। उक्त स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के अवसर पर वाराणसी मंडल के प्रमुख स्टेशनों, संस्थानों, कार्यालयों एवं डिपो में स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा थीम के साथ क्रमशः स्वच्छ संवाद दिवस, स्वच्छ स्टेशन दिवस, स्वच्छ रेलगाड़ी दिवस, स्वच्छ रेल पथ दिवस, स्वच्छ कार्यालय दिवस, स्वच्छ कालोनी और परिसर दिवस, स्वच्छ आहार दिवस, स्वच्छ नीर दिवस, स्वच्छ जलाशय एवं पार्क दिवस, स्वच्छ प्रसाधन एवं पर्यावरण दिवस, स्वच्छ स्पर्धा दिवस, सिंगल युज प्लास्टिक का प्रयोग रोकने का दिवस का एवं अंत में समीक्षा दिवस एवं स्वच्छता पर संवाद कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। वाराणसी मंडल पर स्वच्छता पखवाड़े का समापन गाँधी जयन्ती के दिन विभिन्न आयोजनों के साथ किया जायेगा।



भारतेंदु सभाकक्ष में रेल कर्मचारियों के लिए
हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में एवं वरिष्ठ आंकड़ा व संसाधन प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी श्री नवनीत कुमार वर्मा के नेतृत्व में पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल के राजभाषा विभाग के तत्वावधान में चल रहे राजभाषा सप्ताह के अंतर्गत 19 सितम्बर, 2023 (मंगलवार) को 16:00 बजे से भारतेंदु सभाकक्ष में रेल कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में वाराणसी मंडल के विभिन्न विभागों एवं विभिन्न स्टेशनों पर कार्यरत कुल 50 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन वरिष्ठ आंकड़ा व संसाधन प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी श्री नवनीत कुमार वर्मा ने किया।

रेलवे सुरक्षा बल के स्थापना दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन



रेलवे सुरक्षा बल के स्थापना दिवस के अवसर पर वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त डॉ अभिषेक की अध्यक्षता में 20 सितम्बर बुधवार को रेलवे सुरक्षा बल की स्थापना दिवस पर वाराणसी में स्थित लहुराबीर स्थित (IMA) इंडियन मेडिकल एसोसिएशन भवन में वृहद रक्तदान शिविर (मेगा ब्लड डोनेशन कैम्प) का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त डॉ अभिषेक ने बताया कि रक्तदान सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है इस कैम्प के माध्यम से रेल सुरक्षा बल के जवानों का यह प्रयास है कि एक साथ सम्मिलित होकर जन-जीवन बचाएं। उन्होंने बताया की रेलवे सुरक्षा बल द्वारा रक्तदान शिविर लगाकर सहायक मंडल सुरक्षा आयुक्त/वाराणसी श्री उग्रसेन सिंह एवं सहायक मंडल सुरक्षा आयुक्त/लपरा श्री मुकेश कुमार परमार कुल 17 रेलवे सुरक्षा बल के जवानों ने रक्त दान कर आम जनता की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी।



माननीय सांसद (कुशीनगर) श्री विजय कुमार दूबे द्वारा गाड़ी सं० 15113 गोमतीनगर-छपरा कचहरी एक्सप्रेस के रामकोला स्टेशन पर ठहराव का शुभारंभ।

श्री पुष्कर सिंह रावत, सहायक मंडल इंजीनियर / छपरा श्री जी बी सिंह समेत रेलवे कर्मचारी तथा भारी संख्या में क्षेत्रीय जनता उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन जनसम्पर्क अधिकारी श्री अशोक कुमार द्वारा किया गया।

रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री जनता की सुविधा गाड़ी सं० 15113 गोमतीनगर-छपरा कचहरी एक्सप्रेस को कपतंगज-थावे रेल खण्ड पर पड़ने वाले रामकोला रेलवे स्टेशन पर दो मिनट का प्रायोगिक ठहराव प्रदान किया गया है। इस अवसर पर 30 सितम्बर को रामकोला स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय सांसद (कुशीनगर) श्री विजय कुमार दूबे द्वारा गाड़ी सं० 15113 गोमतीनगर-छपरा कचहरी एक्सप्रेस के रामकोला स्टेशन पर ठहराव का औपचारिक शुभारंभ किया। इस अवसर पर आयोजित उद्घाटन समारोह में माननीय सांसद श्री विजय कुमार दूबे ने अपने संबोधन में गोमतीनगर-छपरा कचहरी के ठहराव के लिए रेलमंत्री एवं रेल प्रशासन का आभार व्यक्त किया। इसके पूर्व माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेस सिंह ने बताया कि पूर्वोत्तर रेलवे का वाराणसी मंडल यात्री प्रधान मंडल है जो अपने यात्रियों को उन्नत सुख सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु लगातार प्रयासरत है। इस अवसर पर मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेस सिंह, सहायक मंडल वाणिज्य प्रबंधक

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के अध्यक्षता में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनके समापक धनराशि को भुगतान।

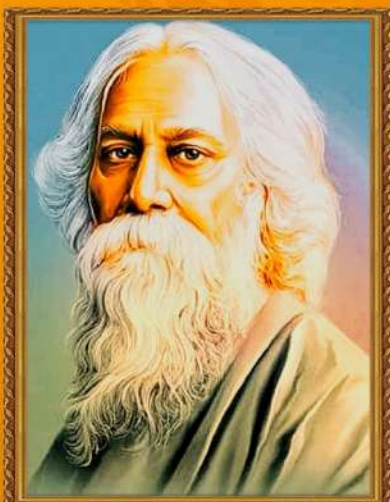


मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव अध्यक्षता में मंडल कार्यालय वाराणसी के प्रेमचंद सभागार कक्ष में 30 सितम्बर, 2023 को आयोजित एक सादे समारोह में एक अधिकारी एवं 06 कर्मचारियों को उनके समापक धनराशि कुल तीन करोड़ उनसठ लाख इक्कीस हजार नौ सौ छब्बीस रुपये (रु 3,69,21,926) का भुगतान किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑपरेशन) श्री राजेश कुमार सिंह, मंडल वित्त प्रबंधक श्री राजेश कुमार, मंडल कार्मिक अधिकारी श्री विवेक मिश्रा, समेत लेखा एवं कार्मिक विभाग के निरीक्षक व कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन की कामना के साथ आश्वासन दिया कि वे अपने को रेल से अलग नहीं समझे और किसी भी समस्या के समाधान हेतु शाखा अधिकारियों अथवा मंडल रेल प्रबंधक से कभी भी सहयोग ले सकते हैं। कर अग्रिम जीवन हेतु शुभकामनाएं दी और उनकी लम्बी एवं उल्लेखनीय सेवा के लिए आभार व्यक्त किया। इसके पूर्व इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑपरेशन) श्री राजेश कुमार सिंह ने सभी सेवानिवृत्त होने कर्मचारियों को माला पहनाकर सम्मानित किया 30 सितम्बर, 2023 को सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव एवं कर्मचारियों में सर्व श्री रविन्द्र कुमार शर्मा / स्टेशन मास्टर / कछवाँ रोड, सन्तोष कुमार श्रीवास्तव / उप टिकट निरीक्षक, महेन्द्र कुमार श्रीवास्तव / वाणिज्य लिपिक, हंसराज प्रसाद / गार्ड, चन्द्रभान सिंह / कार्यालय अधीक्षक / कार्मिक एवं लाल चन्द्र राम / ट्रैक मेंटेनर आदि कर्मचारी शामिल थे।

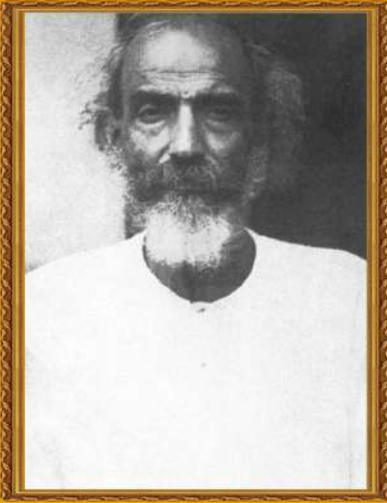
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी का निरीक्षण किया गया।



30 नवंबर 2023 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी का निरीक्षण किया गया।
मंडल रेल प्रबंधक महोदय के कुशल नेतृत्व में निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।



भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।
— रवींद्रनाथ ठाकुर



हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।
- पुरुषोत्तम दास टंडन



हिंदी हमारी राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।
- सुमित्रानंदन पंत



हिंदी साहित्य के पथ पर हमारा कारवां
तेजी से बढ़ता जा रहा है।
- रामवृक्ष बेनीपुरी